The Oak Tree	**बलूत का वृक्ष**
The oak tree that morning was very quiet. It was an enormous tree in the wood; it had a huge trunk and its brandies were well above the ground, spread out in all directions—quiet, stable and immovable. It was part of the earth like the other trees that surrounded it. The others would be shouting with the wind, playing with it, and every leaf would belong to the wind. The small leaves of the oak tree played with it too, but there was great dignity and a depth of life that you felt as you watched. Ivy was clinging to many of the trees, going right up to the top of the highest branches, but the oak had none of it. Even the pines had this clinging ivy which, if allowed, would destroy them. And there in that grove were seven or eight tall and massive redwoods which must have been planted centuries ago. They were surrounded by rhododendrons and in the springtime the grove was a sanctuary not only for birds and rabbits, pheasants and small animals, but also for human beings who cared to go there. You could sit by the hour quietly with the daffodils and the azaleas and look at the blue sky through the leaves. It was an enchanting place and all these massive trees were your friends, if you wanted friends.	सुबह की बेला में बलूत का वह वृक्ष बहुत शांत था। उस जंगल का वह एक विशालकाय वृक्ष था; उसका तना अत्यधिक लंबा-चौड़ा था और उसकी शाखाएँ जमीन से कभी ऊपर उठी हुई तथा चारों ओर फैली हुई थी। उस समय वे शाखाएँ शांत, स्थिर और अचल थी। आसपास खड़े अन्य वृक्षों की भाँति वह बलूत का वृक्ष भी पृथ्वी का हिस्सा था। हवा चलने पर अन्य वृक्ष हवा के साथ खेलते थे और शोर मचाते थे, उनका एक-एक पत्ता हवा के साथ हिलता था। बलूत के वृक्ष के छोटे पत्ते भी हवा के साथ खेलते थे परंतु उनमें परम गरिमा और जीवन की गहराई थी जिनका अनुभव उन्हें ध्यान से देखने पर होता था। आइवी की लताएँ बहुत सारे वृक्षों से लिपटी हुई थीं, वे वृक्ष की चोटी की शाखाओं तक पहुँच रही थी, परंतु बलूत का वृक्ष उनसे अछूता था। चीड़ के वृक्षों पर भी आइवी की लताएँ छायी हुई थीं और यदि उन्हें वहाँ से हटाया नहीं गया तो वे उन चीड़ के वृक्षों को बर्बाद कर देंगी। और वहाँ उस उपवन में रेडवुड के सात-आठ लंबे तथा अत्यंत विशाल वृक्ष भी थे जिन्हें सदियों पहले वहाँ लगाया गया होगा। उनके चारों बुरुंश के वृक्ष थे। वसंत ऋतु में वह उपवन एक शरण-स्थल बन जाता था न केवल पक्षियों, खरहों, चेड़ों और छोटे-छोटे जानवरों के लिए बल्कि उन मनुष्यों के लिए भी जिन्हें वहाँ जाना प्रिय था। आप वहाँ पीले फूल वाली नरगिस और अजेलिया के उन पौधों के साथ घंटों शांत बैठै रह सकते थे और पत्तों के झुरमुटों से झाँकते नीले आसमान को देख सकते थे। वह एक मंत्रमुग्ध करने वाला स्थान था और आसपास खड़े थे विशाल वृक्ष आपके मित्र थे, यदि आपको मित्र की आवश्यकता थी।
It was a place of rare beauty, quiet, isolated, and people hadn't spoilt it. It is strange how human beings desecrate nature with their killing, with their noise and vulgarity. But here, with the redwoods and the oak and all the spring flowers it was really a sanctuary for the quiet mind, for a mind that is as stable and firm as those trees—not from some belief, some dogma or in some	वह एक दुर्लभ सौन्दर्य और शांति का स्थान था, जो एकांत में था और लोगों के द्वारा अभी नष्ट-भ्रष्ट नहीं किया गया था। वह विचित्र बात है कि लोग जीव-हत्या, अशांति और अपने फूहड़पन के द्वारा किस तरह प्रकृति को अपवित्र कर देते हैं! लेकिन रेडवुड और चीड़ के वृक्षों तथा वसंत ऋतु के समस्त फूलों से भरा यह स्थान सचमुच ही शांत मन के लिए एक शरण-स्थल था, अर्थात एक ऐसे मन के लिए जो उतना ही अचल और अडिग हो जितना कि वे वृक्ष परंतु यह अचलता और

dedicated purpose: the free mind doesn't need these. Looking at those trees that were so extraordinarily still on that afternoon, for you couldn't hear a machine, the road was far away and the nearby house was quiet, there was an utter silence. Even the breeze had stopped and not a single leaf stirred. The new spring grass was a delicate green; you hardly dared touch, it. The earth, the trees and the pheasant that watched you were indivisible. It was all part of that extraordinary movement of life and living, the depth of which thought could never touch. The intellect may spin a lot of theories about it, build a philosophic structure around it, but the description is not the described. If you sat quietly, far away from all the past, then perhaps you would feel this; not you as a separate human being feeling it, but rather because the mind was so utterly still there was an immense awareness without the division of the observer.	अडिगता किसी विश्वास एवं हठधर्म से उत्पन्न न हो अथवा किसी उद्देश्य के प्रति समर्पण में निहित न हो। वस्तुतः मुक्त मन को इन चीजों की जरूरत ही नहीं होती। उन वृक्षों को देखते हुए, जो उस अपराह के समय असाधारण रूप से शांत और स्थिर थे, परम मौन का अनुभव हो रहा था, मानव निर्मित यंत्रों का शोर वहाँ नहीं था, सड़क काफी दूर थी और निकट के घर में भी सन्नाटा छाया हुआ था। यहाँ तक कि हवा भी थम गयी थी और एक पत्ता तक नहीं हिल रहा था। वसंत ऋतु की नयी उगी घास इतनी मृदुल हरी थी कि उसे छूने की हिम्मत नहीं हो रही थी। पृथ्वी वृक्ष और पक्षी जो आपको निहार रहे थे परस्पर अविभाज्य थे। वे सब जीवन और जीवन- प्रक्रिया के उस असाधारण स्पंदन के हिस्से थे जिसकी गहराई की थाह विचार कभी नहीं ले सकता इस संबंध में बुद्धि भले ही ढेर सारे सिद्धांतो का जाल बुन ले, इसके चारों ओर एक दार्शनिक ढाँचा भी खड़ा कर ले, परंतु यह शाब्दिक वर्णन स्वयं वह वर्णित वस्तु नहीं है। यदि आप अपने समस्त अतीत से बहुत दूर होकर कुछ समय के लिए शांत बैठ जाएँ तब शायद आपको इसकी अनुभूति होगी; एक पृथक मानव के रूप में आप इसका अनुभव नहीं करेंगे बल्कि मन के अत्यंत शांत और निश्चल हो जाने के कारण वहाँ द्रष्टा के विभाजन से मुक्त एक परम सजगता होगी।
And if you wandered away a little distance there was a farm with huge pigs—mountains of flesh, pink, snorting, ready for the market. They said it was a very good money-making business. You would often see a lorry come up a winding rough farm road and there would be fewer pigs the next day. "But we must live" they said, and the beauty of the earth is forgotten.	यदि आप टहलते हुए वहाँ से थोड़ी दूर चले जाएँ तो आपको बड़े-बड़े सुअरों का एक फार्म मिलेगा - पशुओं के पहाड़, गुलाबी रंग के, फुफकारते हुए, बाजार में बिकने के लिए तैयार। उन लोगों का कहना था कि पैसा कमाने के लिए यह एक बहुत अच्छा व्यवसाय है। उस फार्म की उबड़-खाबड और घुमावदार सड़क पर अक्सर एक ट्क आता हुआ दिखाई पड़ता था और अगले दिन सुअरों की संख्या कम हो जाती थी। ‘‘लेकिन हमें तो जीना है’’ ऐसा वे कहते, और पृथ्वी का सौन्दर्य भुला दिया जाता।
	के. एफ. टी. इंगलैंड बुलेटिन ८, १९७०।
How should be a School	**विद्यालय कैसा होना चाहिए?**
A school which is successful in the worldly sense is more often than not a failure as an educational centre. A large	सांसारिक अर्थ में जो विद्यालय सफल होते हैं, शिक्षा-केन्द्र के रूप में उनके असफल होने की ही

and flourishing institution in which hundreds of children are educated together, with all its accompanying show and success, can turn out bank clerks and super-salesmen, industrialists or commissars, superficial people who are technically efficient; but there is hope only in the integrated individual, which only small schools can help to bring about. That is why it is far more important to have schools with a limited number of boys and girls and the right kind of educators, than to practise the latest and best methods in large institutions.	सम्भावना अधिक होती है। एक बड़ी एवं समृद्ध संस्था, जिसमें सैकड़ों बच्चों को एक साथ बड़े दिखावे के साथ और बड़ी सफलता के साथ शिक्षा दी जाती है, वह बैंक क्लर्क, अच्छे विक्रेता, उद्योगपति, अथवा सरकारी पदाधिकारी जैसे सतही व्यक्ति ही उत्पन्न करती है जो टेकनीक में कार्य कुशल होते हैं। परंतु आशा केवल समन्वित व्यक्ति से ही की जा सकती है और उन्हें विकसित करने में केवल छोटे विद्यालय ही सहायक सिद्ध हो सकते हैं। शिक्षा–पद्धतियों का प्रयोग करने की अपेक्षा सीमित संख्या में बालाकों एवं बालिकाओं वाले ऐसे विद्यालयों का होना अधिक महत्वपूर्ण है जिनमें सही ढंग के शिक्षक अध्यापन करते हों।
Unfortunately, one of our confusing difficulties is that we think we must operate on a huge scale. Most of us want large schools with imposing buildings, even though they are obviously not the right kind of educational centres, because we want to transform or affect what we call the masses.	दुर्भाग्य से हमारी भ्रान्तिपूर्ण कठिनाई हमारा यह विचार ही है कि हमें एक बड़े स्तर पर कार्य करना चाहिए। हम में से अधिकांश व्यक्ति बड़े विद्यालय चाहते हैं जिनकी प्रभावशाली इमारतें हों, क्योंकि हम जिसे जन समूह कहते हैं उसे परिवर्तित अथवा प्रभावित करना चाहते है। यद्यपि यह स्पष्ट है कि ऐसी संस्थाएँ सही प्रकार के शिक्षा केन्द्र नहीं होती।
In building enormous institutions and employing teachers who depend on a system instead of being alert and observant in their relationship with the individual student, we merely encourage the accumulation of facts, the development of capacity, and the habit of thinking mechanically, according to a pattern; but certainly none of this helps the student to grow into an integrated human being. Systems may have a limited use in the hands of alert and thoughtful educators, but they do not make for intelligence. Yet it is strange that words like "system," "institution," have become very important to us. Symbols have taken the place of reality, and we are content that it should be so; for reality is disturbing, while shadows	बड़ी बड़ी संस्थाओं का हम निर्माण करते हैं तथा ऐसे शिक्षकों को नियुक्त करते हैं जो प्रत्येक छात्र के साथ अपने सम्बन्ध में न तो सचेत होते हैं न सतर्क; वे केवल एक पद्धति पर आश्रित रहते हैं। ऐसा करके हम केवल हम सूचनाओं के संकलन को, कार्य–क्षमता के विकास को, और यन्त्रवत् एवं किसी प्रारूप के अनुरूप सोचने की आदत को ही प्रोत्साहित करते हैं; परंतु निश्चय ही यह सब समन्वित व्यक्ति के रूप में विकसित होने में छात्र की सहायता नहीं करता। सचेत और विचारशील शिक्षकों द्वारा पद्धतियों का कोई सीमित उपयोग हो भी सकता है परंतु कोई भी पद्धति प्रज्ञा को विकसित नहीं करती। फिर भी आश्चर्य की बात है कि ‘‘पद्धति’’ ‘‘संस्था’’, जैसे शब्द हमारे लिए बड़े महत्त्व के हो गये हैं। यथार्थ का स्थान प्रतीकों ने ले लिया है और हम इससे संतुष्ट हैं कि ऐसा ही होना चाहिए; क्योंकि जो यथार्थ है वह परेशानी पैदा करता है, जबकि उसकी परछाइयों से आराम मिलता है।

give comfort.	
Nothing of fundamental value can be accomplished through mass instruction, but only through the careful study and understanding of the difficulties, tendencies and capacities of each child; and those who are aware of this, and who earnestly desire to understand themselves and help the young, should come together and start a school that will have vital significance in the child's life by helping him to be integrated and intelligent. To start such a school, they need not wait until they have the necessary means. One can be a true teacher at home, and opportunities will come to the earnest.	जनता के सामूहिक प्रशिक्षण के द्वारा मौलिक महत्त्व की कोई वस्तु नहीं उपलब्ध हो सकती। उसकी उपलब्धि तो तभी सम्भव है जब प्रत्येक बालक की क्षमताओं एवं प्रवृत्तियों का हम सावधानी से निरीक्षण करें और उन्हें समझें; और जो लोग इसके प्रति जागरूक हैं, जो ईमानदारी से चाहते हैं कि अपने को समझें तथा बालकों की सहायता करें, उन्हें एक साथ मिलकर एक ऐसा विद्यालय आरम्भ करना चाहिए जो समन्वित तथा प्रज्ञापूर्ण विकास के लिए बालक के जीवन में सहायक हो। ऐसा विद्यालय बालक के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान लेगा। ऐसे विद्यालय को आरम्भ करने के लिए उन्हें आवश्यक साधनों को जुटाने की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। अपने घर पर ही कोई व्यक्ति एक सच्चा अध्यापक बन सकता है और यदि वह सच्चा है तो उसे उचित अवसरों की कमी न होगी।
Those who love their own children and the children about them, and who are therefore in earnest, will see to it that a right school is started somewhere around the corner, or in their own home.Then the money will come - it is the least important consideration. To maintain a small school of the right kind is of course financially difficult; it can flourish only on self-sacrifice, not on a fat bank account. Money invariably corrupts unless there is love and understanding. But if it is really a worthwhile school, the necessary help will be found. When there is love of the child, all things are possible.	जो लोग अपने बच्चों से तथा अपने चारों ओर के बच्चों से प्रेम करते हैं और इसीलिए जो तत्पर हैं वे एक सही ढंग के विद्यालय को कही पास में ही अथवा उनके अपने ही घर में आरम्भ कर देंगे। फिर उसके लिए आवश्यक धन आयेगा, जिसका अधिक महत्त्व नहीं है। इसमें कोई संदेह नहीं कि सही प्रकार के एक छोटे से विद्यालय को बनाये रखना आर्थिक दृष्टि से बहुत कठिन कार्य है, वह केवल आत्मत्याग से ही उन्नति कर सकता है, न कि बैंक के किसी बड़े खाते से। यदि प्रेम और अवबोध नहीं है तो धन अनिवार्यतः भ्रष्ट बनाता है। परन्तु यदि विद्यालय वास्तव में उपयोगी है तो उसे आवश्यक सहायता मिलेगी। जहाँ बालक के प्रति प्रेम है, वहाँ सभी वस्तुएँ सम्भव हैं।
As long as the institution is the most important consideration, the child is not. The right kind of educator is concerned with the individual, and not with the number of pupils he has; and such an educator will discover that he can have a vital and significant school which some parents will support. But the teacher must have the flame of interest;	जब तक संस्था ही सर्वाधिक महत्व की बात है, तब तक बालक को महत्त्व नहीं मिल सकता। सही शिक्षक का लगाव व्यक्ति से होता है न कि छात्रों की संख्या से; और ऐसे शिक्षक को ज्ञात होगा कि वह एक महत्वपूर्ण एवं जीवंत विद्यालय चला सकता है एवं कुछ माता-पिता उसकी सहायता करने को तैयार हैं। परंतु अध्यापक के अन्दर उत्साहपूर्ण रुचि होनी चाहिए; यदि उसका उत्साह शिथिल है तो उसकी संस्था भी दूसरी संस्थाओं की भाँति

if he is lukewarm, he will have an institution like any other.	ही होगी।
If parents really love their children, they will employ legislation and other means to establish small schools staffed with the right kind of educators; and they will not be deterred by the fact that small schools are expensive and the right kind of educators difficult to find.	यदि माता-पिता वास्तव में अपने बच्चों से प्रेम करते हैं, तो ऐसे छोटे विद्यालयों की स्थापना के लिए जिनमें सही प्रकार के शिक्षक नियुक्त हों, वे कानून तथा दूसरें साधनों की सहयाता लेंगे। यह सही है कि छोटे विद्यालय खर्चीले होते हैं और सही प्रकार के शिक्षक प्राप्त करना कठिन होता है, परंतु इससे वे पीछे नहीं हटेंगे।
They should realize, however, that there will inevitably be opposition from vested interests, from governments and organized religions, because such schools are bound to be deeply revolutionary. True revolution is not the violent sort; it comes about through cultivating the integration and intelligence of human beings who, by their very life, will gradually create radical changes in society.	फिर भी उन्हें यह समझना चाहिए कि निहित स्वार्थो द्वारा, सरकारों और संगठित धर्मो द्वारा, अनिवार्यतः उसका विरोध होगा; क्योंकि ऐसे विद्यालय निश्चित ही बड़े क्रान्तिकारी होंगे। सही क्रान्ति हिंसक क्रांति नहीं होती; वह व्यक्तियों में समन्वय तथा प्रज्ञा के पोषण से आती है और ऐसे ही व्यक्ति अपने जीवन के द्वारा समाज में मौलिक परिवर्तन उत्पन्न करेंगे।
But it is of the utmost importance that all the teachers in a school of this kind should come together voluntarily, without being persuaded or chosen; for voluntary freedom from worldliness is the only right foundation for a true educational centre. If the teachers are to help one another and the students to understand right values, there must be constant and alert awareness in their daily relationship.	परंतु यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि इस प्रकार के विद्यालयों में सभी शिक्षक स्वेच्छा से आयें, न तो उनको बाध्य किया जाय और न ही उनका चुनाव हो, क्योंकि सांसारिकता से उनका स्वैच्छिक रूप से स्वतंत्र होना ही सही आधार है जिस पर एक वास्तविक शिक्षा केन्द्र खड़ा हो सकता है। यदि अध्यापक सम्यक् जीवन मूल्यों को समझने में एक-दूसरे की और छात्रों की सहायता करते हैं तो उनके दैनिक सम्बन्ध में एक सतर्क और सतत जागरूकता आ ही जाती है।
In the seclusion of a small school one is apt to forget that there is an outside world, with its everincreasing conflict, destruction and misery. That world is not separate from us. On the contrary, it is part of us, for we have made it what it is; and that is why, if there is to be a fundamental alteration in the structure of society, right **education** is the first step.	छोटे से विद्यालय के एकांत में यह स्वाभाविक है कि व्यक्ति यह भूल जाय कि एक बाहरी संसार भी है जिसमें निरन्तर बढ़ने वाला द्वंद्व, विनाश और कष्ट है। यह संसार हम से पृथक् नहीं है। यही नहीं यह हमारा ही अंग है, क्योंकि जो कुछ यह है वह हमने ही बनाया है; और इसीलिए यदि समाज की संरचना में कोई मौलिक परिवर्तन होना है तो सही शिक्षा उसके लिए पहला कदम है।

Only right **education**, and not ideologies, leaders and economic revolutions, can provide a lasting solution for our problems and miseries; and to see the truth of this fact is not a matter of intellectual or emotional persuasion, nor of cunning argument.	विचार–प्रणालियाँ, नेता तथा आर्थिक क्रांतियाँ नहीं वरन् सम्यक् शिक्षा ही हमारी समस्याओं और कष्टों का स्थायी समाधान दे सकती है। इस सत्य को बौद्धिक तथा भावनात्मक आग्रह के द्वारा नहीं देखा जा सकता और न चतुर तर्क–वितर्क के ही द्वारा उसे समझा जा सकता है।
If the nucleus of the staff in a school of the right kind is dedicated and vital, it will gather to itself others of the same purpose, and those who are not interested will soon find themselves out of place. If the centre is purposive; and alert, the indifferent periphery will wither and drop away; but if the centre is indifferent, then the whole group will be uncertain and weak.	यदि एक सही विद्यालय में अध्यापकों का केन्द्रीय समूह है जो निष्ठावान है तथा जीवंत है तो वह ऐसे ही दूसरे व्यक्तियों को अपने चारों ओर एकत्रित कर लेगा और दूसरे जो उसमें रुचि नहीं रखते शीघ्र ही वहाँ अपने को अकेला अनुभव करने लगेंगे। यदि यह केन्द्रीय समूह दृढ़ संकल्प वाला एवं सतर्क है तो उदासीन परिधि समाप्त हो जायेगी या अलग हो जायेगी; परंतु यदि केन्द्र ही उदासीन है तो सारा समूह अनिश्चित और दुर्बल हो जायेगा।
The centre cannot be made up of the headmaster alone. Enthusiasm or interest that depends on one person is sure to wane and die. Such interest is superficial, flighty and worthless, for it can be diverted and made subservient to the whims and fancies of another. If the headmaster is dominating, then the spirit of freedom and co-operation obviously cannot exist. A strong character may build a first-rate school, but fear and subservience creep in, and then it generally happens that the rest of the staff is composed of nonentities.	यह केन्द्र केवल प्रधानाध्यापक से नहीं बनता। जो उत्साह अथवा रुचि केवल एक ही व्यक्ति पर निर्भर है वह निश्चय ही शिथिल होकर समाप्त हो जायेगी। ऐसी रुचि छिछली, अस्थिर और मूल्यहीन होती है, क्योंकि उसे दूसरों की सनकों और कल्पनाओं द्वारा परिवर्तित किया जा सकता है तथा उनका दास बनाया जा सकता है। यदि प्रधानाध्यापक अधिकार जमानेवाला है तो स्पष्ट है कि स्वतंत्रता और सहयोग की भावना का वहाँ अस्तित्व नहीं हो सकता। एक दृढ़ चरित्र वाला व्यक्ति एक प्रथम श्रेणी के विद्यालय का निर्माण कर सकता है परतु भय और अधीनता वहाँ चुपके से आ जाती है और तब प्रायः यही होता है कि स्टाफ के शेष सदस्य अस्तित्वहीन हो जाते हैं।
Such a group is not conducive to individual freedom and understanding. The staff should not be under the domination of the headmaster, and the headmaster should not assume all the responsibility; on the contrary, each teacher should feel responsible for the whole. If there are only a few who are interested, then the indifference or opposition of the rest will impede or	ऐसा समूह व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और समझ में सहायक नहीं होता। स्टाफ को प्रधानाध्यापक के प्रभुत्व के अधीन नहीं होना चाहिए और प्रधानाध्यापक को सभी दायित्वों को अपने ही ऊपर नहीं ले लेना चाहिए; बल्कि होना तो यह चाहिए कि प्रत्येक अध्यापक सम्पूर्ण के लिए अपने को जिम्मेदार समझे। यदि केवल थोड़े ही व्यक्ति हैं जिनमें वास्तविक अभिरुचि है तो शेष लोगों की उदासीनता अथवा उनका विरोध सामूहिक प्रयत्न में बाधक बनेगा अथवा उसे अवरुद्ध कर देगा।

stultify the general effort.	
One may doubt that a school can be run without a central authority; but one really does not know, because it has never been tried. Surely, in a group of true educators, this problem of authority will never arise. When all are endeavouring to be free and intelligent, cooperation with one another is possible at all levels. To those who have not given themselves over deeply and lastingly to the task of right **education**, the lack of a central authority may appear to be an impractical theory; but if one is completely dedicated to right **education**, then one does not require to be urged, directed or controlled. Intelligent teachers are pliable in the exercise of their capacities; attempting to be individually free, they abide by the regulations and do what is necessary for the benefit of the whole school. Serious interest is the beginning of capacity, and both are strengthened by application.	यह प्रश्न किया जा सकता है कि एक केन्द्रीय सत्ता के अभाव में क्या कोई विद्यालय चलाया जा सकता है; परंतु इसके विषय में वास्तव में कुछ नहीं कहा जा सकता क्योंकि उसका कभी प्रयत्न नहीं किया गया। निस्संदेह सच्चे शिक्षकों के समूह में सत्ताधिकार की यह समस्या कभी नहीं उठेगी। जब सभी मुक्त एवं विवेकपूर्ण होने के लिए प्रयत्नशील हैं तो प्रत्येक स्तर पर एक-दूसरे के साथ सहयोग सम्भव हो जाता है। जिन लोगों ने सम्यक् शिक्षा के कार्य के प्रति गम्भीरता से अथवा स्थायी रूप से अपने को समर्पित नहीं किया है, उन्हें केन्द्रीय सत्ता का अभाव एक अव्यावहारिक सिद्धांत प्रतीत हो सकता है, परंतु यदि कोई व्यक्ति ऐसी सम्यक् शिक्षा के प्रति पूर्णतया समर्पित है तो उसे प्रेरित करने की या निर्देशित अथवा नियंत्रित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। प्रज्ञावान अध्यापक अपनी क्षमताओं के प्रयोग में नमनीय होते हैं; व्यक्तिगत रूप से वे स्वतंत्र होने का प्रयत्न करते हैं परंतु उसके साथ-साथ वे नियमों का पालन भी करते हैं और सम्पूर्ण विद्यालय के हित के लिए जो आवश्यक होता है, करते हैं। गहरी रुचि ही क्षमता का समारम्भ है, और प्रयोग द्वारा दोनो ही चीजें दृढ़ होती हैं।
If one does not understand the psychological implications of obedience, merely to decide not to follow authority will only lead to confusion. Such confusion is not due to the absence of authority, but to the lack of deep and mutual interest in right **education**. If there is real interest, there is constant and thoughtful adjustment on the part of every teacher to the demands and necessities of running a school. In any relationship, frictions and misunderstandings are inevitable; but they become exaggerated when there is not the binding affection of common interest.	यदि हम आज्ञापालन के मनौवैज्ञानिक निहितार्थो को नहीं समझते, तो सत्ता के आदेश का न पालन करने का निश्चय हमें केवल भ्रांति में ही ले जायेगा। ऐसी भ्रांति सत्ता के अभाव के कारण नहीं होती, बल्कि वह सही शिक्षा में लोगों की परस्पर गहरी रुचि के अभाव के कारण होती है। जब रुचि वास्तविक होती है तो विद्यालय चलाने की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रत्येक अध्यापक निरन्तर विवेकपूर्ण सामंजस्य करता है। किसी भी परस्पर सम्बन्ध में विवाद और गलत-फहमी का होना तो अवश्यंभावी है, परंतु जब सबको बाँधने वाला, सामूहिक रुचि से प्रेरित स्नेह नहीं होता तभी वे गलत-फहमी और विवाद बढ़ जाते हैं।
There must be unstinted co-operation among all the teachers in a school of the	सही प्रकार के विद्यालय में सभी अध्यापकों के बीच पूर्ण सहयोग होना चाहिए। सारे स्टाफ की प्रायः बैठकें होनी

right kind. The whole staff should meet often, to talk over the various problems of the school; and when they have agreed upon a certain course of action, there should obviously be no difficulty in carrying out what has been decided. If some decision taken by the majority does not meet with the approval of a particular teacher, it can be discussed again at the next meeting of the faculty.	चाहिए और विद्यालय की विभिन्न समस्याओं पर चर्चा होनी चाहिए; और जब उनमें किसी कार्यवाई पर सहमति हो जाती है तो स्पष्टतः जो तय हो चुका है उसके कार्यान्वयन में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। यदि बहुमत ने जो निर्माण लिया है उसका कोई एक विशेष अध्यापक समर्थन नहीं करता तो अध्यापकों की दूसरी बैठक में उस पर पुनः चर्चा की जा सकती है।
No teacher should be afraid of the headmaster, nor should the headmaster feel intimidated by the older teachers. Happy agreement is possible only when there is a feeling of absolute equality among all. It is essential that this feeling of equality prevail in the right kind of school, for there can be real co-operation only when the sense of superiority and its opposite are non-existent. If there is mutual trust, any difficulty or misunderstanding will not just be brushed aside, but will be faced, and confidence restored.	किसी भी अध्यापक को प्रधानाध्यापक से भयभीत नहीं होना चाहिए और न ही प्रधानाध्यापक को पुराने अध्यापकों से भय खाना चाहिए। जब सभी लोगों के बीच पूर्ण समानता की भावना होती है तो सुखद सहमति सम्भव होती है। एक सही प्रकार के विद्यालय में समानता की इस भावना को होना आवश्यक है, क्योंकि वास्तविक सहयोग तभी सम्भव है जब किसी से श्रेष्ठ या हीन होने की भावना का अस्तित्व ही न हो। यदि एक दूसरे पर भरोसा हो तो किसी भी कठिनाई अथवा गलतफहमी की केवल उपेक्षा नहीं कर दी जायेगी, बल्कि उसका सामना किया जायेगा और पुनः विश्वास पैदा किया जायेगा।
If the teachers are not sure of their own vocation and interest, there is bound to be envy and antagonism among them, and they will expend whatever energies they have over trifling details and wasteful bickerings; whereas, irritations and superficial disagreements will quickly be passed over if there is a burning interest in bringing about the right kind of **education**. Then the details which loom so large assume their normal proportions, friction and personal antagonisms are seen to be vain and destructive, and all talks and discussions help one to find out what is right and not who is right.	यदि अध्यापकगण अपने पेशे और अपनी रुचि के विषय में निश्चित नहीं है तो उनके बीच द्वेष अथवा संघर्ष का होना स्वाभाविक है और वे, जो कुछ शक्ति उनमें है, उसे छोटी-छोटी बातों और व्यर्थ के झगड़ों में नष्ट करेंगे; जबकि यदि सही प्रकार की शिक्षा प्रदान करने के लिए उनमें ज्वलन्त अभिरुचि है तो झुंझलाहट और ऊपरी असहमति को शीघ्र ही समाप्त कर दिया जायेगा। तब छोटी-मोटी बातें जो इतनी बड़ी दिखलाई देती है अपने समान्य रूप में आ जायेंगी तथा संघर्ष और व्यक्तिगत वैमनस्य निरर्थक और विनाशकारी दिखायी देने लगेंगे और सभी चर्चाएँ तथा परस्पर संवाद यह पता लगाने में सहायक होंगे कि क्या सही है, न कि कौन सही है।
Difficulties and misunderstandings should always be talked over by those	कठिनाइयों और गलतफहमियों पर उन लोगों को हमेशा ही चर्चा करते रहना चाहिए जो समान उद्देश्य से किसी

who are working together with a common intention, for it helps to clarify any confusion that may exist in one's own thinking. When there is purposive interest, there is also frankness and comradeship among the teachers, and antagonism can never arise between them; but if that interest is lacking, though superficially they may co-operate for their mutual advantage, there will always be conflict and enmity.	काम को मिल कर रहे हैं, क्योंकि इससे विचारों में होने वाली भ्राँतियों को दूर करने में सहायता मिलती है। जब अभिरुचि सप्रयोजन होती है तो अध्यापकों में परस्पर स्पष्टवादिता एवं मैत्री भी आ जाती है और उनके बीच कभी वैमनस्य नहीं उत्पन्न हो सकता परतु यदि उस प्रकार की अभिरुचि का अभाव है, तो चाहे ऊपर से वे परस्पर लाभ के लिए सहयोग करते हों, द्वंद्व और वैर–भाव सदा बना ही रहेगा।
There may be, of course, other factors that are causing friction among the members of the staff. One teacher may be overworked, another may have personal or family worries, and perhaps still others do not feel deeply interested in what they are doing. Surely, all these problems can be thrashed out at the teachers' meeting, for mutual interest makes for cooperation. It is obvious that nothing vital can be created if a few do everything and the rest sit back.	निस्संदेह दूसरे भी अनेक कारण हैं जो स्टाफ के सदस्यों में संघर्ष का कारण बन सकते हैं। ऐसा हो सकता है कि कोई अध्यापक कार्य से बोझिल हो, दूसरे की व्यक्तिगत अथवा पारिवारिक समस्याएँ हो सकती है और ऐसे लोग भी हो सकते हैं जिनकी उस काम में ही कोई गहरी रुचि न हो जिसे वे कर रहे हैं। निश्चय ही इन सभी समस्याओं को अध्यापकों की बैठक में विचार–विमर्श द्वारा सुलझाया जा सकता है, क्योंकि पारस्परिक रुचि सहयोग उत्पन्न करती है। यह स्पष्ट है कि कुछ ही लोग सब काम करें और शेष बेठे रहें तो कोई महत्त्व की बात हो ही नहीं सकती।
27 Equal distribution of work gives leisure to all, and each one must obviously have a certain amount of leisure. An overworked teacher becomes a problem to himself and to others. If one is under too great a strain, one is apt to become lethargic, indolent, and especially so if one is doing something which is not to one's liking. Recuperation is not possible if there is constant activity, physical or mental; but this question of leisure can be settled in a friendly manner acceptable to all.	काम का समान वितरण सभी को विश्राम देता है, और यह स्पष्ट है कि प्रत्येक व्यक्ति को कुछ मात्रा में विश्राम का अवसर मिलना ही चाहिए। कार्य से बोझिल अध्यापक स्वयं अपने लिए भी समस्या होता है तथा दूसरों के लिए भी। यदि किसी व्यक्ति पर कार्य का अत्यधिक बोझ है, तो स्वाभाविक है कि वह सुस्त एवं कार्यविमुख हो जायेगा, विशेष रूप से उस स्थिति में जब कि वह कोई ऐसा काम कर रहा है जिसमें उसकी रुचि नहीं है। यदि शारीरिक अथवा मानसिक कोई ऐसा कार्य है जिसे निरन्तर करना पड़ रहा है तो थकान से छुटकारा पाना सम्भव नहीं; परतु विश्राम के घंटों का यह प्रश्न मित्रतापूर्ण ढंग से इस प्रकार तय किया जा सकता है कि वह सबको स्वीकार हो।
28 What constitutes leisure differs with each individual. To some who are greatly interested in their work, that work itself is leisure; the very action of interest, such as study, is a form of	विश्राम कैसा होना चाहिए इसमें व्यक्तिगत भिन्नताएँ होती हैं। जो लोग अपने कार्य में बहुत अभिरुचि रखते हैं उनके लिए स्वयं वह कार्य ही विश्राम होता है; मनपसंद कोई भी कार्य, जैसे अध्ययन, स्वयं विश्रान्ति का एक रूप है। दूसरे ऐसे भी लोग है जिन्हें विश्रान्ति तभी

relaxation. To others, leisure may be a withdrawal into seclusion.	मिलती है जब वे एकान्त में चले जाते हैं।
29 If the educator is to have a certain amount of time to himself, he must be responsible only for the number of students that he can easily cope with. A direct and vital relationship between teacher and student is almost impossible when the teacher is weighed down by large and unmanageable numbers.	यदि यह आवश्यक हो कि शिक्षक के पास अपने लिए भी कुछ समय बचे तो उसके ऊपर केवल उतने ही छात्रों का दायित्व होना जिसका निर्वाह वह आसानी से कर सकता है। छात्र एवं अध्यापक के बीच एक प्रत्यक्ष एवं जीवंत सम्बन्ध उस स्थिति में लगभग असम्भव हो जाता है जब अध्यापक के ऊपर एक बड़ी संख्या में छात्रों का दायित्व होता है जिसका निर्वाह वह नहीं कर पाता।
30 This is still another reason why schools should be kept small. It is obviously important to have a very limited number of students in a class, so that the educator can give his full attention to each one. When the group is too large he cannot do this, and then punishment and reward become a convenient way of enforcing discipline.	यह भी एक कारण है जिसकी वजह से विद्यालय को छोटा रखना चाहिए। स्पष्टतया यह आवश्यक है कि एक कक्षा में एक सीमित संख्या में ही छात्रों को रखा जाय, जिससे कि शिक्षक प्रत्येक छात्र पर अपना पूरा ध्यान दे सके। जब छात्र–समूह बड़ा होता है तो शिक्षक के लिए ऐसा करना सम्भव नहीं होता और उस अवस्था में अनुशासन बनाये रखने का एक सुविधाजनक तरीका दण्ड एवं पुरस्कार ही रह जाता है।
31 The right kind of **education** is not possible en masse. To study each child requires patience, alertness and intelligence. To observe the child's tendencies, his aptitudes, his temperament, to understand his difficulties, to take into account his heredity and parental influence and not merely regard him as belonging to a certain category - all this calls for a swift and pliable mind, untrammelled by any system or prejudice. It calls for skill, intense interest and, above all, a sense of affection; and to produce educators endowed with these qualities is one of our major problems today.	सही शिक्षा एक बड़े समूह में नहीं दी जा सकती। बालक का अध्ययन करने के लिए धैर्य, सावधानी तथा प्रज्ञा आवश्यक हैं। बालक की प्रवृत्तियों को समझना, और उसके वंशानुक्रम तथा पैतृक प्रभाव को ध्यान में रखना न कि उसे किसी विशेष वर्ग–कोटि का समझना, इस सबके लिए स्फूर्ति से भरे एक ऐसे नमनीय मन की आवश्यकता है जो किसी पद्धति अथवा पूर्वाग्रह से बाधित न हो। उसके लिए कुशलता एवं गहन अभिरुचि की और सबसे अधिक स्नेह बोध की आवश्यकता है; और ऐसे शिक्षकों को उत्पन्न करना जिनमें ये गुण हों, आज की प्रमुख समस्याओं में से एक है।
32 The spirit of individual freedom and intelligence should pervade the whole school at all times. This can hardly be left to chance, and the casual mention at odd moments of the	पूरे विद्यालय में हर समय व्यक्तिगत स्वतंत्रता की भावना तथा प्रज्ञा व्याप्त रहनी चाहिए। इसे केवल संयोग पर छोड़ देना उचित नहीं है। फालतू समय में ''स्वतंत्रता'' तथा ''प्रज्ञा'' जैसे शब्दों के लापरवाही से उल्लेख करने का कोई बहुत अर्थ नहीं है।

words"freedom" and "intelligence" has very little significance.	
33 It is particularly important that students and teachers meet regularly to discuss all matters relating to the well-being of the whole group. A student council should be formed, on which the teachers are represented, which can thrash out all the problems of discipline, cleanliness, food and so on, and which can also help to guide any students who may be somewhat self-indulgent, indifferent or obstinate.	यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि छात्र एवं अध्यापक पूरे समूह के हित से सम्बन्धित विषयों पर विचार करने के लिए नियमित रूप से मिलें तथा चर्चा करें। एक छात्र-समिति को संगठित किया जाना चाहिए जिससे अध्यापकों का प्रतिनिधित्व भी हो। इस समिति को अनुशासन, सफाई, भोजन आदि सभी समस्याओं पर पूरे तौर से विचार करना चाहिए। इसे ऐसे छात्रों के मार्गदर्शन में भी सहायता करनी चाहिए जो मौज-मस्ती में ही लिप्त हों या उदासीन अथवा जिद्दी हों।
34 The students should choose from among themselves those who are to be responsible for the carrying out of decisions and for helping with the general supervision. After all, self-government in the school is a preparation for self-government in later life. If, while he is at school, the child learns to be considerate, impersonal and intelligent in any discussion pertaining to his daily problems, when he is older he will be able to meet effectively and dispassionately the greater and more complex trials of life. The school should encourage the children to understand one another's difficulties and peculiarities, moods and tempers; for then, as they grow up, they will be more thoughtful and patient in their relationship with others.	अपने में से ही छात्रों को ऐसे व्यक्तियों का चुनाव करना चाहिए जो लिये गये निर्णयों को लागू करने के लिए जिम्मेदार हो तथा जो सामान्य निरीक्षण में सहायता करें। आखिर स्कूल का स्वशासन ही बाद के जीवन में स्वशासन की तैयारी है। यदि अपने स्कूली जीवन में बालक अपनी दैनिक समस्याओं से सम्बन्धित विचार-विमर्श में दूसरों का ध्यान रखना एवं निष्पक्ष तथा विवेकपूर्ण होना सीखता है तो बड़े होने पर जीवन की अधिक व्यापक तथा अधिक जटिल संकटों का सामना वह अधिक प्रभावशाली और तटस्थ ढंग से करने में समर्थ होगा। यह आवश्यक है कि एक-दूसरे की कठिनाइयों, विचित्रताओं, मनोदशाओं और व्यक्तिगत स्वभावों को समझने में विद्यालय बालकों की सहायता करे, क्योंकि तभी जैसे-जैसे वे बड़े होंगे दूसरों के साथ अपने सम्बन्ध में अधिक विचारवान और धैर्यवान होंगे।
35 This same spirit of freedom and intelligence should be evident also in the child's studies. If he is to be creative and not merely an automaton, the student should not be encouraged to accept formulas and conclusions. Even in the study of a science, one should reason with him, helping him to see the problem in its entirety and to use his	बालक के अध्ययन में भी स्वतंत्रता तथा प्रज्ञा की यही भावना दिखायी पड़नी चाहिए। यदि उसे सर्जनशील बनना है न कि केवल एक स्वचालित यंत्र मात्र, तो बने-बनाये फार्मुलों और निष्कर्षों को स्वीकार करने के लिए छात्र को प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए। यहाँ तक कि विज्ञान के अध्ययन में भी उसके साथ तर्क-वितर्क होना चाहिए जिससे यह समस्या को पूर्ण रूप से समझ सके और स्वयं अपनी निर्णय-शक्ति का

own judgment.	उपयोग कर सके।
36 But what about guidance? Should there be no guidance whatsoever? The answer to this question depends on what is meant by `guidance.' If in their hearts the teachers have put away all fear and all desire for domination, then they can help the student towards creative understanding and freedom; but if there is a conscious or unconscious desire to guide him towards a particular goal, then obviously they are hindering his development. Guidance towards a particular objective, whether created by oneself or imposed by another, impairs creativeness.	प्रश्न उठता है कि तब ''मार्गदर्शन'' का क्या होगा? क्या किसी प्रकार के मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं है? इस प्रश्न का उत्तर इस पर निर्भर करता है कि ''मार्गदर्शन'' का क्या अर्थ है। यदि अपने हृदय से अध्यापकों ने सभी प्रकार के भय को तथा प्रभुत्व की सारी वासना को निकाल दिया है तो वे सृजनात्मक समझ तथा स्वतंत्रता की ओर बढ़ने में छात्र की सहायता कर सकते हैं; परंतु यदि उनमें किसी विशेष लक्ष्य की ओर छात्र को ले जाने की कोई चेतन या अचेतन इच्छा है तो स्पष्ट है कि वे उसके विकास में बाधा पहुँचा रहे हैं। किसी विशेष लक्ष्य के लिए मार्गदर्शन, चाहे वह लक्ष्य स्वयं निर्धारित किया गया हो अथवा दूसरों के द्वारा आरोपित हो, सर्जनशीलता को नष्ट कर देता है।
37 If the educator is concerned with the freedom of the individual, and not with his own preconceptions, he will help the child to discover that freedom by encouraging him to understand his own environment, his own temperament, his religious and family background, with all the influences and effects they can possibly have on him. If there is love and freedom in the hearts of the teachers themselves, they will approach each student mindful of his needs and difficulties; and then they will not be mere automatons, operating according to methods and formulas, but spontaneous human beings, ever alert and watchful.	यदि शिक्षक का सम्बन्ध व्यक्ति की स्वतंत्रता से है न कि स्वयं उसकी अपनी पूर्व धारणाओं से, तो वह बालक को प्रोत्साहित करेगा कि वह स्वयं अपने परिवेश, अपने स्वभाव और अपनी धार्मिक तथा पारिवारिक पृष्ठ–भूमि को एवं इन सबके प्रभावों और परिणामों को समझे। ऐसा करना स्वतंत्रता की खोज में बालक के लिए सहायक होगा। यदि स्वयं अध्यापकों के हृदय में प्रेम और स्वतंत्रता है तो वे प्रत्येक छात्र की आवश्यकताओं और कठिनाइयों का ध्यान रखते हुए उसकी देखभाल करेंगे; और तब वे उस स्वचालित यंत्र के समान नहीं होंगे जो किसी पद्धति और फार्मुला के अनुसार काम करता है; वे सदा सचेत एवं जागरूक रहने वाले सहज मानव होंगे।
38 The right kind of **education** should also help the student to discover what he is most interested in. If he does not find his true vocation, all his life will seem wasted; he will feel frustrated doing something which he does not want to do. If he wants to be an artist and instead becomes a clerk in some office, he will spend his life grumbling and	छात्र किस वस्तु में सर्वाधिक रुचि रखता है, सही शिक्षा को इसका पता लगाने में उसकी सहायता करनी चाहिए। यदि वह अपना सही पेशा नहीं खोज लेता तो उसे अपना समस्त जीवन व्यर्थ हुआ प्रतीत होगा और ऐसा काम करने में जिसको कि वह नहीं करना चाहता वह कुण्ठा का अनुभव करेगा। यदि वह एक कलाकार बनना चाहता है और उसके बदले किसी आफिस में क्लर्क बन जाता है तो वह अपना सारा जीवन शिकायत करने तथा

pining away. So it is important for each one to find out what he wants to do, and then to see if it is worth doing. A boy may want to be a soldier; but before he takes up soldiering, he should be helped to discover whether the military vocation is beneficial to the whole of mankind.	क्षीण होने में बिता देगा। इसलिए यह पता लगाना हर विद्यार्थी के लिए आवश्यक है कि वह क्या करना चाहता है और फिर यह देखना चाहिए कि क्या वह कार्य करने योग्य है। एक लड़का सैनिक बनना चाहता है; परंतु इसके पहले कि वह सैनिक बनने का प्रशिक्षण ले उसे यह पता लगाने में मदद करनी चाहिए कि समस्त मानव जाति के लिए सैनिक का पेशा लाभदायक है या नहीं।
39 Right **education** should help the student, not only to develop his capacities, but to understand his own highest interest. In a world torn by wars, destruction and misery, one must be able to build a new social order and bring about a different way of living.	केवल अपनी क्षमताओं के विकास में ही नहीं वरन् अपनी चरम अभिरुचियों को समझने में भी सम्यक् शिक्षा को छात्र की सहायता करनी चाहिये। युद्ध, विनाश और दुःख से जर्जर इस विश्व में यह आवश्यक है कि व्यक्ति में एक नई समाज–व्यवस्था का निर्माण करने की तथा एक भिन्न प्रकार की जीवन–शैली को विकसित करने की क्षमता हो।
40 The responsibility for building a peaceful and enlightened society rests chiefly with the educator, and it is obvious, without becoming emotionally stirred up about it, that he has a very great opportunity to help in achieving that social transformation. The right kind of **education** does not depend on the regulations of any government or the methods of any particular system; it lies in our own hands, in the hands of the parents and the teachers.	एक शान्तिपूर्ण एवं प्रबुद्ध समाज का निर्माण करने की जिम्मेदारी मुख्यतः शिक्षक की ही है और इस विषय में बिना किसी भावनात्मक उत्तेजना के यह कहा जा सकता है कि ऐसे सामाजिक रूपांतरण को उपलब्ध करने में सहायता करने का उसे एक बहुत अवसर मिला है। सही प्रकार की शिक्षा न तो किसी सरकार के कानूनों पर निर्भर करती है न किसी विशेष व्यवस्था प्रणाली पर। वह स्वयं हमारे हाथ में है तथा माता–पिता और अध्यापकों के हाथ में है।
41 If parents really cared for their children, they would build a new society; but fundamentally most parents do not care, and so they have no time for this most urgent problem. They have time for making money, for amusements, for rituals and worship, but no time to consider what is the right kind of **education** for their children. This is a fact that the majority of people do not want to face. To face it might mean that they would have to give up their amusements and distractions, and certainly they are not willing to do that.	यदि माता–पिता को वास्तव में अपने बच्चों की चिन्ता होती तो वे एक नये समाज का निर्माण करते; परंतु मौलिक बात यह है कि अधिकांश माता–पिता को उनकी कोई चिन्ता है ही नहीं। और इसलिये उनके पास इस अत्यधिक ज्वलन्त समस्या के लिए समय ही नहीं है। उनके पास धन कमाने के लिए, मनोरंजनों के लिए, कर्मकाण्डों तथा पूजा–पाठ के लिए तो समय है, परंतु यह विचार करने के लिए समय नहीं है कि उनके बच्चों के लिए सही प्रकार की शिक्षा क्या है। यह एक ऐसा तथ्य है जिसका अधिकांश व्यक्ति सामना नहीं करना चाहते। उसका समाना करने का यह अर्थ हो सकता है कि उन्हें अपने मौज–मस्ती और मनोरंजन को छोड़ना पड़े और निश्चय ही वे ऐसा करने के लिए तैयार नहीं है। इसलिए वे अपने बच्चों को स्वयं से दूर किसी स्कूल

So they send their children off to schools where the teacher cares no more for them than they do. Why should he care? Teaching is merely a job to him, a way of earning money.	में भेज देते हैं जहाँ अध्यापक उनकी उससे ज्यादा चिन्ता नहीं करते जितनी कि माता–पिता स्वयं अपने बच्चों की करते हैं। और उन्हें चिन्ता करनी भी क्यों चाहिए? अध्यापन तो उनका केवल एक व्यवसाय है, धनोपार्जन का एक तरीक़ा है।
42 The world we have created is so superficial, so artificial, so ugly if one looks behind the curtain; and we decorate the curtain, hoping that everything will somehow come right. Most people are unfortunately not very earnest about life except, perhaps, when it comes to making money, gaining power, or pursuing sexual excitement. They do not want to face the other complexities of life, and that is why, when their children grow up, they are as immature and unintegrated as their parents, constantly battling with themselves and with the world.	यदि हम पर्दे को हटाकर देखें तो जो संसार हमने बनाया है वह बड़ा सतही, बड़ा नकली और बड़ा कुरूप है; और हम इस आशा से कि सब कुछ किसी–न–किसी प्रकार ठीक हो जायेगा उस पर्दे को सजाते हैं। दुर्भाग्य से अधिकांश व्यक्ति जीवन के विषय में तभी उत्साह दिखाते हैं जब उन्हें धन अर्जित करना होता है, शक्ति प्राप्त करनी होती है अथवा कामोत्तेजनाओं को सन्तुष्ट करना होता है। वे जीवन की दूसरी जटिलताओं को सामना नहीं करना चाहते और यही कारण है कि जब उनके बच्चे बड़े होते हैं तो वे उतने ही अपरिपक्व तथा खंडित होते हैं जितने कि उनके माता–पिता और वे निरन्तर अपने तथा संसार से संघर्ष करते रहते हैं।
43 We say so easily that we love our children; but is there love in our hearts when we accept the existing social conditions, when we do not want to bring about a fundamental transformation in this destructive society? And as long as we look to the specialists to educate our children, this confusion and misery will continue; for the specialists, being concerned with the part and not with the whole, are themselves unintegrated.	बड़ी आसानी से हम कह देते हैं कि हम अपने बच्चों को प्रेम करते हैं परंतु जब हम प्रचलित समाजिक परिस्थितियों को स्वीकार कर लेते हैं तथा जब इस विनाशकारी समाज में किसी मौलिक रूपांतरण को लाने के लिए हम तैयार नहीं होते, तो क्या हमारे हृदय में प्रेम होता है? और जब तक अपने बच्चों की शिक्षा के लिए हम विशेषज्ञों की ओर देखते रहेंगे तब तक यह भ्रांन्ति और पीड़ा बनी रहेगी; क्योंकि विशेषज्ञ, जिनका केवल अंश से होता है न कि सम्पूर्ण से, स्वयं ही खंडित होते हैं।
44 Instead of being the most honoured and responsible occupation, **education** is now considered slightingly, and most educators are fixed in a routine. They are not really concerned with integration and intelligence, but with the imparting of information; and a man who merely imparts information with the world crashing about him is not an educator.	शिक्षा को सर्वाधिक सम्मानजनक तथा दायित्वपूर्ण पेशा मानने के बदले उसे अब तिरस्कारपूर्वक देखा जा रहा है और अधिकांश शिक्षक दिन–प्रति–दिन के कार्यक्रम में ही जकड़ गये हैं। समन्वय तथा प्रज्ञा से उनका कोई वास्तविक सम्बन्ध नहीं रह गया है। उनका काम जानकारी देना मात्र है; और जहाँ व्यक्ति के चारों ओर का संसार खण्ड–खण्ड हो रहा हो वहाँ ऐसा व्यक्ति जो केवल जानकारी देता है शिक्षक नहीं है।

45 An educator is not merely a giver of information; he is one who points the way to wisdom, to truth. Truth is far more important than the teacher. The search for truth is religion, and truth is of no country, of no creed, it is not to be found in any temple, church or mosque. Without the search for truth, society soon decays. To create a new society, each one of us has to be a true teacher, which means that we have to be both the pupil and the master; we have to educate ourselves.	शिक्षक का कार्य जानकारी देना मात्र नहीं है। शिक्षक वह है जो प्रज्ञा एवं सत्य की ओर मार्ग दिखाता है। सत्य वस्तुतः अध्यापक से कही अधिक महत्वपूर्ण है। सत्य की खोज ही धर्म है और सत्य किसी देश या संप्रदाय का नहीं होता; वह मन्दिर, गिरजाघर अथवा मसजिद में नहीं मिलता। सत्य की खोज के अभाव में समाज का शीघ्र ही पतन हो जाता है। एक नवीन समाज की रचना के लिए हम में से प्रत्येक को एक सच्चा शिक्षक बनना पड़ेगा, जिसका अर्थ है कि हमको शिष्य और गुरु दोनों ही बनना होगा; हमें स्वयं अपने को शिक्षित करना होगा।
46 If a new social order is to be established, those who teach merely to earn a salary can obviously have no place as teachers. To regard **education** as a means of livelihood is to exploit the children for one's own advantage. In an enlightened society, teachers will have no concern for their own welfare, and the community will provide for their needs.	यदि एक नवीन सामाजिक व्यवस्था लाना है तो शिक्षक के रूप में उन व्यक्तियों का स्पष्टतः कोई स्थान नहीं हो सकता जो केवल वेतन कमाने के लिए पढ़ाते हैं। शिक्षा को जीविकोपार्जन का साधन समझना वस्तुतः बच्चों का स्वयं अपने लाभ के लिए शोषण करना है। एक प्रबुद्ध समाज में शिक्षकों को अपने कल्याण की चिन्ता नहीं करनी होगी, समाज उनकी आवश्यकताओं को पूरा करेगा।
47 The true teacher is not he who has built up an impressive educational organization, nor he who is an instrument of the politicians, nor he who is bound to an ideal, a belief or a country. The true teacher is inwardly rich and therefore asks nothing for himself; he is not ambitious and seeks no power in any form; he does not use teaching as a means of acquiring position or authority, and therefore he is free from the compulsion of society and the control of governments. Such teachers have the primary place in an enlightened civilization, for true culture is founded, not on the engineers and technicians, but on the educators.	एक सच्चा अध्यापक वह नहीं है जिसने एक प्रभावशाली शिक्षक संस्था का निर्माण किया है या जो राजनीतिज्ञों का एक उपकरण है, और न तो वह जिसने अपने को एक आदर्श, एक विश्वास अथवा एक देश से बाँध रखा है। सच्चा अध्यापक आंतरिक रूप से समृद्ध होता है, अतः अपने लिए कुछ नहीं चाहता। वह महत्वाकांक्षी नहीं होता, इसीलिए वह किसी भी रूप में सत्ता की चाह नहीं करता। वह अध्यापन को पद अथवा सत्ताधिकार प्राप्त करने का साधन नहीं बनाता और इसीलिए समाज की बाध्यता से तथा सरकार के नियन्त्रण से यह मुक्त होता है, क्योंकि सच्ची संस्कृति इन्जीनियरों और टेकनीशियनों पर नहीं, बल्कि शिक्षकों पर आधारित होती है।
	''एजुकेशन ऐंड दि सिगनिफिकंस ऑव लाइफ'' से

	अनूदित।
ON LOVE, SEX, AND THE RELIGIOUS LIFE	**प्रेम, कामवासना और धार्मिक जीवन**
Questioner: Many years ago, when I first became interested in the so-called religious life, I made the strong resolve to cut out sex altogether. I conformed rigorously to what I considered to be an essential requirement of that life and lived with all the fierce austerity of a monkish celibate. Now I see that that kind of puritanical conformity in which suppression and violence are involved is stupid, yet I don't want to go back to my old life. How am I to act now in regard to sex?	प्रश्नकर्ताः अनेक वर्ष पूर्व जब पहली बार तथाकथित धार्मिक जीवन में मेरी अभिरुचि जगी तो मैंने कामवासना पर पूर्ण रूप से रोक लगाने का दृढ़ निश्चय किया। मेरे विचार से धार्मिक जीवन की जो एक अनिवार्य आवश्यकता थी उसका मैंने कठोरतापूर्वक अनुसरण किया और एक संन्यस्त ब्रह्मचारी वाले भीषण संयम-नियम के साथ मैंने अपना जीवन जिया। अब मुझे ऐसा लगता है कि उस प्रकार का अतिनैतिकतावादी अंधानुसरण, जिसमें दमन और हिंसा निहित हैं, मूर्खतापूर्ण है, फिर भी मैं अपनी पुरानी जीवन-शैली की ओर लौटना नहीं चाहता। कामवासना के संबंध में अब मैं क्या करूँ?
Krishnamurti: Why is it that you don't know what to do when there is desire? I'll tell you why. Because this rigid decision of yours is still in operation. All religions have told us to deny sex, to suppress it, because they say it is a waste of energy and you must have energy to find God. But this kind of austerity and harsh suppression and conformity to a pattern does brutal violence to all our finer instincts. This kind of harsh austerity is a greater waste of energy than indulgence in sex.	कृष्णमूर्तिः अभी जबकि आपमें वासना बाकी है तो ऐसा क्यों है कि आपको यह मालूम नहीं कि आपको क्या करना चाहिए? मैं आपको बताऊँगा कि ऐसा क्यों है। ऐसा इसलिए है कि आपका पुराना दृढ़ निश्चय अब भी कार्यरत है। सभी धर्मो ने हमें बताया है कि हम कामवासना का निषेध करें, उसका दमन करें, क्योंकि उनके अनुसार वह हमारी ऊर्जा का अपव्यय है और परमात्मा को प्राप्त करने के लिए हमारे पास ऊर्जा होनी चाहिए। परंतु इस प्रकार के संयम-नियम और कठोर दमन एवं किसी ढाँचे का अनुसरण वस्तुतः हमारी समस्त सूक्ष्म नैसर्गिक वृत्तियों के साथ क्रूर हिंसा करता है। इस प्रकार की कठोर संयम-साधना हमारी ऊर्जा का बहुत बड़ा अपव्यय है अपेक्षाकृत कामवासना में लिप्त होने के।
Why have you made sex into a problem? Really it doesn't matter at all whether you go to bed with someone or whether you don't. Get on with it or drop it but don't make a problem of it. The problem comes from this constant preoccupation. The really interesting thing is not whether we do or don't go to bed with someone but why we have all	आपने कामवासना को एक समस्या क्यों बना लिया है? वस्तुतः इस बात का कोई महत्त्व नहीं कि आप किसी के साथ सोते हैं, या आप ऐसा नहीं करते। यदि आप ऐसा करते ही है तो कीजिए या ऐसा करना छोड़ दीजिए लेकिन इसे एक समस्या मत बनाइए। समस्या बनती है सतत ऊहापोह और उधेड़-बुन से। वस्तुतः महत्वपूर्ण प्रश्न यह नहीं है कि हम किसी के साथ बिस्तर पर जाते हैं या नहीं बल्कि यह प्रश्न कि हमारा जीवन इस

these fragments in our lives. In one restless corner there is sex with all its preoccupations; in another corner there is some other kind of turmoil; in another a striving after this or that, and in each corner there is the continual chattering of the mind. There are so many ways in which energy is wasted.	तरह के खंडों में क्यों बँटा है। हमारे जीवन के एक अशांत कोने में कामवासना है और इससे जुड़े सारे ऊहापोह, दूसरे कोने में अन्य प्रकार की उथल-पुथल और खलबली है एवं किसी और कोने में किसी न किसी चीज को पाने के लिए किया जा रहा जी-तोड़ प्रयास है। इनमें से हर कोने में मन की निरंतर बकबक जारी है। इस प्रकार कई मार्ग हैं जिनसे हमारी ऊर्जा का अनवरत क्षय हो रहा है।
If one corner of my life is in disorder then the whole of my life is in disorder. If there is disorder in my life in regard to sex, then the rest of my life is in disorder. So I shouldn't ask how to put one corner in order but why I have broken life into so many different fragments— fragments which are in disorder within themselves and which all contradict each other. What can I do when I see so many fragments? How can I deal with them all? I have these fragments because I am not whole inside. If I go into all this without causing yet another fragment, if I go to the very end of each fragment, then in that awareness, which is looking, there is no fragmentation. Each fragment is a separate pleasure. I should ask myself whether I am going to stay in some sordid little room of pleasure all my life. Go into the slavery of each pleasure, each fragment, and say to yourself, my God, I am dependent, I am a slave to all these little corners—is that all there is to my life? Stay with it and see what happens.	यदि मेरे जीवन के एक कोने में अव्यवस्था आ जाती है तो यह अव्यवस्था धीरे-धीरे मेरे पूरे जीवन पर छा जाती है। यदि कामवासना को लेकर मेरे जीवन में अव्यवस्था है तो शीघ्र ही मेरा बाकी सारा जीवन भी अव्यवस्था की चपेट में आ जाएगा। अतः मेरा प्रश्न यह नहीं होना चाहिए कि जीवन के एक कोने में मैं व्यवस्था कैसे लाऊँ बल्कि मुझे स्वयं से यह पूछना चाहिए कि मैंने अपने जीवन को इतने सारे अलग-अलग खंडों में आखिर क्यों बांट रखा है - ऐसे खंड जो न केवल स्वयं अपने भीतर अव्यवस्था की स्थिति में है बल्कि वे आपस में भी एक दूसरे के विरोधी हैं। तो इन सारे खंडों को देखने के बाद में क्या कर सकता हूँ? मैं इन सबका समना कैसे कर सकता हूँ? मेरे पास ये सारे खंड इसलिए हैं क्योंकि मैं स्वयं अपने भीतर अखंड नहीं हूँ। यदि मैं इन सारे खंडों की जाँच-पड़ताल बिना कोई नया खंड निर्मित किये करूँ, यदि मैं प्रत्येक खंड को एक छोर से दूसरे छोर तक देख लूँ, तो इस अवलोकन की सजगता में ही मेरे खंडित होने की प्रक्रिया समाप्त हो जाती है। प्रत्येक खंड एक पृथक् सुख का अनुभव है। अतः मुझे स्वयं से यह पूछना चाहिएः क्या मैं जीवन भर इस सुख की छोटी-सी बंद कोठरी में ंही रहने जा रहा हूँ? प्रत्येक सुख अर्थात् प्रत्येक खंड की दासता की गहराई में जाना उसकी छानबीन कीजिए और स्वयं से कहिए, 'हे भगवान, मैं तो आश्रित हूँ, मैं इन सारे छोटे छोटे कोनों का गुलाम हूँ, क्या मेरे जीवन में इतना ही कुछ है?'' इस प्रश्न के साथ टिके रहिए और देखिए कि क्या होता है।
Questioner: I have fallen in love, but I know there is no future to this relationship. It is a situation I have experienced several times before and I don't want to get involved again in all that misery and chaos. Yet I am	प्रश्नकर्ताः मुझे किसी से प्रेम हो गया है, परंतु मुझे मालूम है कि उस व्यक्ति के साथ जो मेरा संबंध है उसका कोई भविष्य नहीं है। यह एक ऐसी स्थिति है जिससे मैं पहले भी अनेक बार गुजर चुका हूँ और मैं नहीं चाहता कि मैं इस सारी पीड़ा और दुर्व्यवस्था में एक बार फिर पड़ूँ। फिर भी इस व्यक्ति के बिना मैं

desperately unhappy without this person. How can I get myself out of this state?	बुरी तरह दुःखी हूँ। इस स्थिति से मैं स्वयं को कैसे बाहर निकालूँ?
Krishnamurti: The loneliness, bleakness, wretchedness you feel with out this person you love existed before you fell in love. What you call love is merely stimulation, the temporary covering up of your emptiness. You escaped from loneliness through a person, used this person to cover it up. Your problem is not this relationship but rather it is the problem of your own emptiness. Escape is very dangerous because, like some drug, it hides the real problem. It is because you have no love inside you that you continually look for love to fill you from the outside. This lack of love is your loneliness, and when you see the truth of this you will never again try to fill it with things and people from outside.	कृष्णमूर्तिः आप जिससे प्रेम करते हैं उसके बिना आप जिस अकेलापन, नीरसता और दुःख का अनुभव करते हैं वह आपके प्रेम में पड़ने से पहले भी मौजूद था। आप जिसे प्रेम कहते हैं वह मात्र उत्तेजना है, वह आपके आंतरिक खालीपन का अस्थायी रूप से छिपाया जाना है। आपने एक व्यक्ति के माध्यम से अपने अकेलेपन से पलायन किया। अकेलेपन को छिपाने के लिए आपने इस व्यक्ति का उपयोग किया। आपकी असली समस्या उस व्यक्ति के साथ आपका संबंध नहीं है बल्कि यह तो स्वयं आपके आंतरिक खालीपन की समस्या है। पलायन एक बहुत खतरनाक चीज है, क्योंकि किसी मादक द्रव्य की तरह यह असली समस्या को छिपा देता है। चूँकि स्वयं आपके भीतर कोई प्रेम नहीं है अतः अपने आंतरिक खालीपन को बाहर से भरने के लिए आप निरंतर प्रेम की खोज कर रहे हैं। प्रेम का यह अभाव ही आपका अकेलापन है और जब आप इस बात की सत्यता को देख लेंगे तो आप से बाहर से वस्तुओं और व्यक्तियों द्वारा भरने की फिर कभी कोशिश नहीं करेंगे।
There is a difference between understanding the futility of this escape and deciding not to get involved in this kind of relationship. A decision is no good because it strengthens the thing you are deciding against. Understanding is quite different. Decision is suppression, violence, conflict, but to see that there is this loneliness, this emptiness inside yourself and that any action whatever on the part of the observer to change it only strengthens it—that is understanding. Even calling it loneliness is an action of the observer to get rid of it. Such action changes nothing, it merely strengthens the loneliness, but complete inaction with regard to this loneliness is change. It is	तो इस पलायन की व्यर्थता को समझना एवं किसी व्यक्ति के प्रति पुनः आसक्त न होने का निर्णय करना इन दोनों बातों में बुनियादी फर्क है। किसी भी निर्णय से कोई लाभ नहीं है क्योंकि यह उस चीज को और अधिक मजबूत करता है जिसके विरोध में आप निर्णय ले रहे हैं। किसी चीज की स्पष्ट समझ बिल्कुल ही भिन्न बात है। निर्णय का अर्थ है दमन, हिंसा एवं द्वंद्व। परंतु यह देखना कि मेरे भीतर अकेलापन एवं खालीपन का बोध है और इसको बदलने के लिए द्रष्टा की ओर से किया जाने वाला कोई भी कर्म इसे और अधिक मजबूत ही बनायेगा यही समझ है। इसको अकेलापन का नाम देना भी इससे छुटकारा पाने के लिए द्रष्टा द्वारा किया जाने वाला एक कर्म ही है। ऐसा कर्म किसी भी चीज का परिवर्तन नहीं कर पाता, यह अकेलेपन को ही मजबूत करता है। परंतु इस अकेलेपन के प्रति पूर्ण अकर्म ही पूर्ण परिवर्तन है। यह वस्तुतः सोचने और अनुभव करने के परे चला जाना है, उन्हें दरकिनार कर देना है।

going beyond feeling and thinking, side-stepping them. Whatever is happening inside you—anger, depression, jealousy or any other conflict at all, drop it instantly. Stop it.	आपके भीतर जो कुछ भी घटित हो रहा है – क्रोध, उदासी, ईर्ष्या या कोई अन्य प्रकार का द्वंद्व – उसे तत्क्षण छोड़िए। उसे रोकिए।
Questioner. Is it possible for a man and woman to live together, to have sex and children, without all the turmoil, bitterness and conflict inherent in such a relationship? Is it possible for there to be freedom on both sides? I don't mean by freedom that the husband or wife should constantly be having affairs with someone else. People usually come together and get married because they fall in love, and in that there is desire, choice, pleasure, possessiveness and tremendous drive. The very nature of this in-loveness is from the start filled with the seeds of conflict.	प्रश्नकर्ताः क्या यह संभव है कि एक पुरुष और एक स्त्री साथ साथ रहें, कामवासना का सुख लें और बच्चे पैदा करें, परतु उनके बीच किसी प्रकार की अशांति, कटुता और द्वंद्व न हो, जैसा कि आम तौर पर हर परस्पर संबंध में अंतर्निहित होता है? क्या यह संभव है कि दोनों ओर से एक-दूसरे को पूरी स्वतंत्रता दी जाए? स्वतंत्रता से मेरा मतलब यह नहीं है कि पति या पत्नी किसी और व्यक्ति से भी अपना प्रेमसंबंध बना लें। आमतौर पर ऐसा होता है कि पुरुष और स्त्री एक-दूसरे के संपर्क में आते हैं और शादी कर लेते हैं क्योंकि उन्हें प्रेम हो जाता है, और इस प्रेम में वासना, चुनाव, सुख, मालिक होने का भाव तथा प्रबल ऊर्जस्विता हैं। 'प्रेम में होने' की जो यह स्थिति है उसका स्वरूप ही ऐसा है कि यह शुरू से ही द्वंद्व के बीजों से भरा होता है।
Krishnamurti: Is it? Need it be? I very much question that. Can't you fall in love and not have a possessive relationship? I love someone and she loves me and we get married—that is all perfectly straightforward and simple, in that there is no conflict at all. (When I say we get married I might just as well say we decide to live together —don't let's get caught up in words.) Can't one have that without the other, without the tail, as it were, necessarily following? Can't two people be in love and both be so intelligent and so sensitive that there is freedom and absence of a centre that makes for conflict? Conflict is not in the feeling of being in love. The feeling of being in love is utterly without conflict. There is no loss of energy in being in love. The loss of energy is in the tail, in everything that follows—jealousy,	कृष्णमूर्तिः क्या सचमुच ऐसा होता है? क्या ऐसा होना जरूरी है? मुझे इसपर अत्यधिक संदेह है। क्या यह संभव नहीं है कि आपको किसी से प्रेम हो जाए और एक-दूसरे के साथ आपका मिल्कियत का संबंध न हो? मैं किसी से प्रेम करता हूँ और वह भी मुझसे प्रेम करती है और हम दोनों शादी कर लेते हैं यहाँ तक तो बात बिल्कुल सीधी और सरल है, इसमें कोई द्वंद्व नहीं है। (जब मैं कहता हूँ कि हम दोनों शादी कर लेते हैं तो ऐसा भी हो सकता है कि हम दोनों सिर्फ एक साथ रहने का निर्णय कर लें अतः शब्दों में ही न उलझ जाएँ।) इसलिए क्या यह संभव नहीं है कि हम एक को पा लें दूसरे के बिना अर्थात् दूसरा पूँछ की तरह अनिवार्यतः पीछे न लगा रहे? क्या यह संभव नहीं है कि दो व्यक्ति एक दूसरे के प्रेम में हों और वे दोनो इतने प्रज्ञावान् और संवेदनशील हों कि उनके बीच स्वतंत्रता हो, और यह केन्द्र अनुपस्थित हो जो द्वंद्व का निर्माण करता है। प्रेम में होने की अनुभूति पूर्णतः द्वंद्वरहित होती है। प्रेम में होने की स्थिति में ऊर्जा का कोई क्षय नहीं होता। ऊर्जा का क्षय तो पूँछ में होता है अर्थात् वैसी हर चीज में जो प्रेम का पूँछ की तरह पीछा करती

possessiveness, suspicion, doubt, the fear of losing that love, the constant demand for reassurance and security. Surely it must be possible to function in a sexual relationship with someone you love without the nightmare which usually follows. Of course it is.	है, जैसे ईर्ष्या, अविश्वास, संदेह, प्रेम को खोने का भय, दूसरे का मालिक होने का भाव, आश्वस्त और सुरक्षित होने की सतत माँग, इत्यादि। मुझे लगता है कि यह बिल्कुल ही संभव है कि जिस व्यक्ति को आप प्रेम करते हैं उसके साथ आप कामवासना के तल पर इस प्रकार जुड़ें कि वह संबंध एक दुःस्वप्न का रूप न ले ले, जैसा कि आम तौर पर होता है। सच पूछिए तो यह बिल्कुल ही संभव है।
	किंस्गटन, इंगलैड, अक्तूबर २, १९६७
	के. एफ. टी. इंगलैंड बुलेटिन ३, १९६९
THE UNBURDENED MIND	**भारमुक्त मन**
There are many problems. The house is burning, not only your particular little place but the house of everyone; it does not matter where one lives, in the Communist world or in the world of affluence or in this poverty-ridden country; the house is burning. This is not a theory, not an idea, not something the expert, the specialist points out. There are revolts, racial conflicts, immense poverty, the explosion of population. There are no limits to cross any more, either going to the moon, or in the direction of pleasure. Organised religions, with their doctrines, beliefs, dogmas and priests, have completely failed and have no meaning any more. There is war and the peace that the politician is trying to bring about is no peace at all.	अनेक समस्याएँ हैं जीवन में। घर जल रहा है, केवल आपका नहीं बल्कि हर व्यक्ति का, चाहे वह जहाँ कहीं भी रहता हो साम्यवादी दुनिया में या पूँजीवादी और समृद्ध दुनिया में या निर्धनता से पीड़ित इस देश में प्रत्येक घर जल रहा है। यह कोई सिद्धांत या काल्पनिक विचार नहीं है, कोई ऐसी चीज नहीं है जो विशेषज्ञ और जानकार लोग हमें बता रहे हैं। चारों तरफ विद्रोह हो रहे हैं, जातीय संघर्ष हो रहे हैं, भीषण गरीबी व्याप्त है और जनसंख्या-विस्फोट हो रहा है। ऐसी कोई सीमाएँ नहीं है जिन्हें लाँघना बाकी है चाहे हमें अंतरिक्ष में जाना हो या सुखोपभोग की दिशा में जाना हो। संगठित धर्म और उनके सिद्धांत, विश्वास, मताग्रह एवं उनके पंडेपुजारी ये सब पूरी तरह असफल हो चुके हैं तथा उनका अब कोई अर्थ नहीं रह गया है। युद्ध जारी है और राजनीतिज्ञ लोग जिस शांति को लाने की कोशिश कर रहे हैं वह कोई शांति है ही नहीं।
Do you see all this?—not as a theory, not as something pointed out for you to accept or to reject, but as something from which you cannot possibly escape, either by resort to some monastery or to some past traditional ideation. The challenge is there for you to answer: it is your responsibility. You have to act, you	क्या आप इस सबको देख पा रहे हैं? किसी सिद्धांत के रूप में नही, किसी ऐसी चीज के रूप में नहीं जिसे स्वीकार या अस्वीकार करने के लिए आपको बताया जा रहा है, बल्कि एक ऐसी चीज के रूप में जिससे आप संभवतः पलायन नहीं कर सकते, किसी मठ या आश्रय की शरण में जाकर अथवा अतीत की किसी परंपरावादी विचार-शैली का आश्रय लेकर। चुनौती आपके सामने खड़ी है जिसका उत्तर आपको देना है, जो आपका

have to do something entirely different; and, if possible, find out if there is a new action, a new way of looking at the whole phenomenon of existence.	उत्तरदायित्व है। आपको कर्म करना है, आपको बिल्कुल ही भिन्न कार्य करना है; और यदि संभव हो तो आपको यह पता लगाना है कि कोई ऐसा कर्म है या नहीं जो बिल्कुल नवीन हो तथा यह भी कि अस्तित्व के पूरे दृश्यप्रपंच को देखने का कोई ऐसा ढंग है या नहीं जो बिल्कुल नया हो।
You cannot possibly look at these problems with an old mind, living a conditioned, nationalistic, individualistic life. The word 'individual' means a being that is not divided, that is indivisible. But individuals are divided in themselves; they are fragmented, they are in contradiction. What you are, society is and the world is. So the world is you, not something apart, outside you. And when you observe this phenomenon throughout the world, the confusion that is created by the politicians with their lust for power, and by the priest turning back to his old responses, muttering a few words in Latin, or Sanskrit, Greek or English, you have no faith or trust in anything or anybody any more. The more you observe outwardly what is going on and the more you observe inwardly, you have no trust in anything nor have you confidence in yourself.	आप अपने पुराने मन से इन समस्याओं को सही-सही नहीं देख सकते अर्थात् यदि आप एक संस्कारबद्ध, राष्ट्रवादी या व्यक्तिपरक जीवन जी रहे हैं तो आप समस्याओं को ठीक-ठीक नहीं देख सकते। सही माने में व्यक्ति तो वहीं प्राणी है जो विभाजित न हो, जो अविभाज्य हो। परंतु यदि आप अपने आसपास के व्यक्तियों को देखें तो पायेंगे कि वे अपने भीतर विभाजन और खंडित है; स्वयं अपने साथ वे असंगति की स्थिति में हैं। आप जो कुछ है, वही समाज है, वहीं विश्व है। अतः विश्व वही है जो आप हैं आपसे अलग या आपसे बाहर कुछ नहीं। और जब आप इस प्रत्यक्ष घटना का सारे जगत में अवलोकन करते हैं, उस अस्तव्यस्तता का अवलोकन जिसका निर्माण राजनीतिज्ञों ने अपनी शक्ति की वासना से किया है तथा जिसका निर्माण पंडे-पुरोहितों ने अपने घिसे-पिटे कर्मकांड और पूजा-पाठ से किया है, तो आपकी किसी भी वस्तु या किसी भी व्यक्ति में आस्था और श्रद्धा नहीं रह जाती। आपके बाहर और आपके भीतर जो कुछ घटित हो रहा है उसका जितना ही अधिक आप अवलोकन करते हैं उतना ही किसी भी चीज का आपका भरोसा कम हो जाता है तथा आपमें आत्मविश्वास भी नहीं रह जाता है।
So the question is whether it is at all possible to throw away immediately all conditioning. That means, as the crisis is extraordinary, you must have a new mind, a new heart, a new quality in the mind, a new freshness, an innocency. And that word innocency means an inability to be hurt. It is not a symbol, it is not an idea, but it is actually to find out if your mind is capable of not being hurt by any event, by any psychological strain, pressure, influence, so that it is completely free. If there is any form of resistance, then it is not innocency. It	इसलिए अब प्रश्न यह है क्या यह किसी तरह संभव है कि आप समस्त संस्कारों को तत्क्षण परे हटा दें? इसका मतलब यह है कि चूँकि सामने खड़ा संकट असाधारण है, अतः आपके पास एक नवीन मन और एक नवीन हृदय होना चाहिए अर्थात् आपके मन में एक नयी गुणवत्ता तथा एक नयी ताजगी एवं बाल सुलभ सरलता होनी चाहिए। यहाँ निर्दोषता का तात्पर्य है ऐसा मन जो आहत होने की सामर्थ्य खो चुका है। यह कोई प्रतीक नहीं है, यह कोई कल्पना नहीं है, इसका अर्थ वस्तुतः यह पता लगाना है कि आपका मन किसी घटना के द्वारा अथवा किसी मनोवैज्ञानिक तनाव, दबाव या प्रभाव के द्वारा अब आहत नहीं हो सकता ताकि यह पूर्णतः मुक्त हो। यदि किसी भी प्रकार का प्रतिरोध है तो मन की

must be a mind that is capable of looking at this crisis as though for the first time, with a fresh mind, a young mind, yet not a mind that is in revolt. Students are in revolt against the pattern, the established order, but the revolt does not answer the problem, the human problem, which is much vaster than the revolt of the student.	बाल सुलभ सरलता संभव नहीं है। मन को तो ऐसा होना चाहिए जो इस संकट को इस प्रकार देखने में समर्थ हो मानो वह इसे पहली बार देख रहा है अर्थात् यह संकट मानो एक ताजा और युवा मन से देखा जा रहा है, परंतु ध्यान रहे कि यह मन विद्रोह की स्थिति में न हो। स्थापित ढाँचा तथा व्यवस्था के विरुद्ध विद्यार्थी विद्रोह कर रहे हैं परंतु यह विद्रोह मानव समस्या का समाधान नहीं कर पाता। मानव समस्या के सामने विद्यार्थी का विद्रोह छोटा पड़ जाता है।
Can the mind, which is heavily conditioned, break through, so that it has great depth, a quality which is not the result of training, propaganda, of acquired knowledge? And can the heart which is burdened with sorrow, which is heavy with all the problems of life— the conflicts, the confusion, the misery, the ambition, the competition— can that heart know what it means to love? Love that has no jealousy, no envy, that is not dictated to by the intellect, love that is not merely pleasure. Can the mind be free to observe, to see? Can the mind reason logically, sanely, objectively and not be a slave to opinions, to conclusions? Can the mind be unafraid? Can the heart know what it means to love—not according to social morality for social morality is immorality. You are all very moral according to society, but you are really very immoral people. Don't smile. That is a fact. You can be ambitious, greedy, envious, acquisitive full of hate, anger and that is considered perfectly moral. But if you are sexual that is considered something abnormal, and you keep it to yourself. And you have patterns of actions and ideas— what things you should do, how a sanyasi should behave, that he must not marry, that he must lead a life of celibacy; this is all sheer nonsense.	संस्कारों से बोझिल मनुष्य का मन क्या अपनी संस्कारबद्धता को तोड़ सकता है, ताकि इसके पास परम गहराई हो अर्थात् एक ऐसी गुणवत्ता हो जो किसी प्रशिक्षण, प्रचार या संचित ज्ञान का परिणाम नहीं है? और क्या मनुष्य का हृदय, जो दुःख से बोझिल है, जो जीवन की विविध समस्याओं के बोझ तले दबा है – वह जीवन जो द्वंद्व, भ्रांति, पीड़ा, महत्वाकांक्षा एवं प्रतिस्पर्धा से भरा है – क्या ऐसा मानव हृदय यह जान सकता है कि प्रेम करने का क्या अर्थ है? ऐसा प्रेम जो ईष्या और जलन पर आधारित न हो, जो बुद्धि द्वारा निर्देशित न हो तथा जो मात्र सुख का ही दूसरा रूप न हो। देखने और अवलोकन करने के लिए क्या मन स्वतंत्र हो सकता है? क्या यह संभव है कि मन तार्किक ढंग से तथा स्वस्थचित्त एवं वस्तुपरक रूप से सोच विचार करे और वह मतों एवं निष्कर्षो का गुलाम न हो? क्या मानव मन निर्भय हो सकता है? क्या मानव हृदय प्रेम के अर्थ को जान सकता है? ऐसा प्रेम जो सामाजिक नैतिकता पर आधारित न हो क्योंकि सामाजिक नैतिकता वस्तुतः अनैतिकता है। समाज की नजर में आप सभी लोग बहुत नैतिक हैं परंतु सच यह है कि आप लोग घोर अनैतिक व्यक्ति हैं। मुस्कराइए मत। यह एक तथ्य है। आप महत्वाकांक्षी, लोभी, ईर्ष्यालु हो सकते हैं, आप संग्रह–वृत्ति, घृणा एवं क्रोध से भरे हो सकते हैं – इन सबको बिल्कुल स्वाभाविक माना जाता है। परंतु यदि आप कामुक हैं तो यह एक अस्वाभाविक चीज मानी जाती है, और इसलिए इसे आप अपने तक ही छुपाये रखते हैं। आपके पास आचार और विचार के ढाँचे हैं आपको क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, एक संन्यासी का आचरण कैसा होना चाहिए, उसे विवाह कदापि नहीं करना चाहिए, उसे बह्मचर्य का जीवन बिताना चाहिए, इत्यादि। परंतु यह सब बेकार की बातें

	है।
Now how are you to confront this issue? What should you do? First of all, you have to realise that you are all slaves to words. The word 'to be' has conditioned your mind. Your whole conditioning is based on that term 'to be': I was, I am, I will be. The I was' conditions and shapes the 'I am' which controls the future. All your religions are based on that. All your conceptual progress is based on that term 'to be'. The moment you use the word, not only verbally but with significance, you inevitably assert being as I am'—I am God', I am the everlasting', I am a Hindu or a Muslim'. The moment you live within that idea or within that feeling of being or becoming or having been, you are a slave to that word.	अब आप इस मुद्दे का समाना कैसे करेंगे? आपको क्या करना चाहिए? सबसे पहले तो आपको यह बात स्पष्ट रूप से महसूस करनी होगी कि आप सब लोग शब्दों के गुलाम हैं। 'होना' – इस शब्द ने आपके मन को संस्कारबद्ध कर डाला है। 'होना' – इसी क्रिया पर आधारित हैं आपके सारे संस्कार। 'होना' अर्थात् मैं था, मैं हूँ और मैं होऊँगा। 'मैं था' – यही आकार और संस्कार देता है 'मैं हूँ' को जो भविष्य को नियंत्रित करता है। इसी पर आधारित है आपके सारे धर्म। आपकी समस्त वैचारिक प्रगति जिस शब्द पर आधारित है वह है 'होना'। जिस क्षण आप इस शब्द का प्रयोग करते हैं – केवल शाब्दिक प्रयोग नहीं बल्कि इस प्रकार का भाव भी मन में लाना – तो आप अवश्यंभावी रूप से अप्रत्यक्षतः यह आग्रह कर रहे हैं कि मैं हूँ, मैं परमात्मा हूँ, मैं शाश्वत हूँ, मैं एक हिन्दू हूँ या मैं एक मुसलमान हूँ। जब आप इस विचार या भाव के अधीन जीते हैं – जिसका आशय है कि मैं हूँ या मुझे होना है या मैं रहा हूँ, तो आप शब्द के गुलाम हो जाते हैं।
The crisis is in the present. The crisis is never in the future, nor in the past; it is in the present, in the living actual present of the mind which is conditioned by that term 'to be' and is incapable of meeting the problem. The moment you are caught in that word and the meaning of that word you have time. And you think time will solve the problem. Are you following all this, not verbally, but in your heart, in your mind, in your being, because it is a matter of tremendous meaning and value and importance. Because, the moment you are free of that word and of the significance of what is behind that word—the past, of having been—which conditions the present and shapes the future, then your response to the present is immediate.	संकट वर्तमान में है। संकट भविष्य में कदापि नहीं है और न ही अतीत में है। संकट है वर्तमान में, जीने की प्रक्रिया में, जिसका अर्थ है मन का वास्तविक वर्तमान, जो 'होना' शब्द से संस्कारित है और समस्या का सामना करने में असमर्थ है। जैसे ही आप इस शब्द में और इस शब्द के अर्थ में उलझ जाते हैं, आप समय के शिकार हो जाते हैं, और आपको लगता है कि समय ही समस्या का समाधान करेगा। क्या आप इस सब को समझ पा रहे हैं – केवल शाब्दिक रूप से नहीं बल्कि अपने हृदय, मन और प्राणों से भी? यह मैं इसलिए पूछ रहा हूँ क्योंकि यह परम अर्थ, परम मूल्य और परम महत्त्व का विषय है। जब आप उस शब्द से तथा उस शब्द के पीछे छिपे हुए अर्थ से मुक्त हो जाते हैं, अर्थात् जब आप उस अतीत से और अपने उस अतीतबद्ध अस्तित्व से मुक्त हो जाते हैं जो वर्तमान को संस्कार देता है तथा भविष्य को आकार देता है, तो वर्तमान को दिया जाने वाला आपका उत्तर तत्क्षण घटित होता है।
If you really understand this, there is an	यदि आप वस्तुतः इसको समझ लें तो आपके दृष्टिकोण

extraordinary revolution in your outlook. This is really meditation, to be free of that movement of time.	में एक असाधारण क्रांति घटित हो जाएगी। वस्तुतः यही ध्यान है – ध्यान अर्थात् समय की गति से मुक्त हो जाना।
How can the mind, being aware of itself, perceive the truth of this? Not intellectually, for that has no meaning whatsoever. You know that when there is danger your whole response to the danger is immediate. You see a bus hurtling towards you, and your response is immediate. When you say I will love' it is not love. Please don't accept this as a theory or as an idea to think about. You don't think about danger. There is no time, there is only action. A mind that is no longer thinking in terms of time, which is 'to be', is acting out of time. And the crisis demands action which is not of time.	स्वयं के प्रति सजग होकर मन इस बात की सत्यता को कैसे देख सकता है? बौद्धिक रूप से नहीं, क्योंकि उसका कोई भी अर्थ नहीं है। आपको मालूम है कि जब कोई खतरा उपस्थित होता है तो खतरे की ओर आपकी प्रतिक्रिया तत्क्षण होती है। आप एक बस को तेजी से अपनी ओर आते हुए देखते हैं, और आपकी प्रतिक्रिया तत्क्षण होती है। जब आप कहते हैं, मैं प्रेम करूँगा, तो यह प्रेम नहीं है। कृपया इसे आप एक सिद्धान्त या धारणा के रूप में न स्वीकार कर लें जिस पर आपको सोच-विचार करना है। जब कोई खतरा उपस्थित होता है तो आपको उस पर सोच-विचार नहीं करना पड़ता। वहाँ समय नहीं होता, केवल कर्म होता है। जो मन अब समय की शैली में नहीं सोच रहा है समय यानी होना ऐसा मन समय के परे कर्मरत है। और हमारे सामने खड़ा जो संकट है उसके लिए ऐसा कर्म चाहिए जो समयजनित न हो।
This is one of the most difficult things. Don't say you have understood it. Don't say let us get on with it, because on that word I am' your whole culture is based. The moment you have this feeling I am', you must be in contradiction, in division—'I am' and 'you are' 'we and they'—the moment division takes place, a fragmentation in the assertion that 'you are', you are no longer an individual, that is, a single, whole unit. Do you know what that word 'whole' means?—whole means healthy and it also means holy. So the individual who is wholly undivided in himself is healthy, holy, which means he is not in conflict.	यह कठिनतम चीजों में से एक है। यह मत कहिए कि आपने इसे समझ लिया है। यह मत कहिए कि हम इसके साथ आगे बढ़ते रहें, क्योंकि जिन शब्दों पर आपकी सारी संस्कृति टिकी है वे हैं 'मैं हूँ', जैसे ही आपके भीतर यह भाव आता है कि मैं हूँ, आप हैं, हम और वे इत्यादि। जैसे ही विभाजन होता है अर्थात् जैसे ही आप हैं और मैं हूँ जैसे कथनों की विखंडन-प्रक्रिया घटित होती है आप एक व्यक्ति नहीं रह जाते, आप एक एकल और अखंड इकाई नहीं रह जाते। क्या आप जानते हैं कि इस 'अखंड' शब्द का क्या निहितार्थ है? अखंड का निहितार्थ है स्वस्थ तथा पवित्र। अतः ऐसा व्यक्ति जो स्वयं में पूरी तरह अविभाजित है वह स्वस्थ और पवित्र है जिसका अर्थ है कि वह द्वंद्व में नहीं है।
Are you working as hard as the speaker, or are you merely listening to words? To communicate means to build, to create together, and that is the beauty of	क्या आप उतना परिश्रम कर रहे है जितना कि वक्ता कर रहा है या आप सिर्फ शब्दों को सुन रहे हैं? संवाद करने का अर्थ है मिलजुल कर निर्माण करना, सृजन करना और यही सौन्दर्य है संवाद करने का। यह प्रक्रिया

communication. And that ceases when the speaker becomes an authority and you are listening merely as students or disciples. There is no teacher, no disciple. There is only learning. What you have learnt is of the past and acting from what has been accumulated is a process of acquisition, whereas learning should be a movement, not an accumulation.	तक रुक जाती है जब वक्ता अधिकारी बन जाता है और आप विद्यार्थी या शिष्य बनकर उसे सुनने लगते हैं। यहाँ न कोई गुरु है न कोई शिष्य। केवल सीखने की क्रिया है। आप जो सीख चुके हैं वह अब अतीत का बन चुका है, और सीखे हुए ज्ञान से कार्य करना संग्रह की ही एक प्रक्रिया है। सीखने की क्रिया को एक सतत गति होनी चाहिए, नकि संचित करने की एक प्रक्रिया।
If you understood this with your heart and mind, you would lead a different kind of life. The test and the proof of learning is your life. A mind which is facing this crisis is always new, fresh, full of vitality. But if you are responding to it in terms of 'I am', in terms of the past, then your response is going to create more misery, more mischief, more wars. So long as you are a Hindu, a Muslim, so long as you assert that 'I am', you are bringing about degeneration in yourself and in the world.	यदि आप इन बातों को अपने पूरे हृदय और मन से समझ रहे हैं तो आप एक भिन्न प्रकार का जीवन जियेंगे। आप सचमुच सीख रहे हैं या नहीं इस बात की परीक्षा या इसका प्रमाण स्वयं आपका जीवन है। ऐसा मन जो इस संकट का सामना कर रहा है वह सदा नवीनता, ताजगी एवं जीवंतता से भरा होता है। परंतु यदि आप इस संकट का उत्तर 'मैं हूँ' की शैली में या अतीत की शैली में दे रहे हैं तो आपका उत्तर वस्तुतः ज्यादा ही दुःख, उपद्रव और युद्ध पैदा करने जा रहा है। जब तक आप एक हिंदू या एक मुसलमान बने हुए हैं, जब तक आपका आग्रह है कि 'मैं हूँ' तब तक आप स्वयं अपने में और विश्व में अध पतन ही लायेंगे।
What is the new quality of the mind and the heart that responds immediately, not in terms of the past, not in terms of the future? The moment it responds in terms of the past, it is still living in the framework of the term 'to be'. Let me put it differently. Our action is based on idea, knowledge, tradition; it is memory. In the technological world that is necessary. The whole of scientific knowledge, the development of technology is based on experience, accumulation and knowledge. That is absolutely necessary. But a mind that has a new quality, a new dimension, a new way, must act without the past and also not in terms of the future—which	मन और हृदय की वह नयी गुणवत्ता क्या है जो भूत या भविष्य की शैली में नहीं बल्कि तत्क्षण उत्तर देती है? यदि मन अतीत की शैली में उत्तर देता है तो इसका अर्थ है कि वह अब भी 'होना' शब्द के ढाँचे में ही जी रहा है। इसी बात को मुझे भिन्न ढंग से रखने दीजिए। हमारा कर्म सामान्यतः विचार, ज्ञान और परंपरा पर आधारित है; यह वस्तुतः स्मृति ही है। तकनीकी जगत में यह आवश्यक है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की जानकारी और उसका विकास वस्तुतः अनुभव और ज्ञान के संग्रह पर आधारित है। यह परम आवश्यक है। परंतु ऐसा मन जिसके पास एक नयी गुणवत्ता, एक नया आयाम तथा एक नया ढंग है उसे अतीत से अछूता होकर कार्य करना चाहिए, उसे भविष्य की शैली में नहीं कार्य करना चाहिए। इसी का अर्थ है स्वतंत्रता।

means freedom.	
How is that freedom to act, to come about? How is the mind to act without the past?—the past being the conditioning as a Hindu, the past being the result of influence, education, race? If you act in these terms, then you are not meeting the crisis. The question is: how is a mind that is free from the past, free from the implication of 'to be', how is it to act?	कार्य करने की जो यह स्वतंत्रता है उसका आगमन कैसे होगा? अतीत से मुक्त होकर मन कैसे कार्य करेगा? अतीत का अर्थ है एक हिन्दू या मुसलमान के रूप में किसी व्यक्ति का संस्कार, तथा उसकी शिक्षा, जाति इत्यादि के प्रभाव का परिणाम। यदि आप इन्हीं शैलियों में कार्य करते हैं तो इसका अर्थ है कि आप संकट का सामना नहीं कर रहे हैं। प्रश्न यह है : जो मन अतीत से और 'होना' के निहितार्थो से मुक्त है वह कैसे कार्य करेगा?
If you have understood the question, then you will see that what is important is perception, the seeing, observing. If there is an interval between perception and action, that interval is time. When you see something which is danger, which may cause harm physically, your response to it is instant; there is no thinking about it. There is no interval between perception and action, no gap, there is immediate response and action.	यदि आपने इस प्रश्न को समझ लिया है तो आप देखेंगे कि जो चीज महत्वपूर्ण है वह है प्रत्यक्ष रूप से देखना और अवलोकन करना। यदि प्रत्यक्ष रूप से देखने और कर्म करने के बीच कोई अंतराल है तो यह अंतराल ही समय है। जब आप किसी ऐसे खतरे को देखते हैं जो आपको शारीरिक क्षति पहुँचा सकता है तो आपकी प्रतिक्रिया तत्क्षण होती है; वहाँ खतरे के संबंध में कोई सोचना–विचारना नहीं होता। यहाँ अवलोकन और कर्म के बीच कोई अंतर या अंतराल नहीं होता। वहाँ प्रतिक्रिया और कर्म तत्क्षण घटित होता है।
Now seeing that a problem cannot be solved from the past, that in no circumstance can one respond fully, wholly to this immense challenge in terms of the past, seeing this, the action that emerges is completely new. Have you understood? Do you see that response? Or do you only see it intellectually, which means verbally. If you see it verbally you are seeing it fragmentarily, and therefore it is not a whole response. But if you actually see the danger of your conditioning, of the culture in which you have been brought up, there is the immediate action of freedom.	अतीत से किसी भी समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता तथा किसी भी परिस्थिति में कोई व्यक्ति अतीत की शैली में किसी विकट चुनौती का संपूर्ण और समग्र रूप से उत्तर नहीं दे सकता। इन तथ्यों को देखने के बाद जो कर्म प्रकट होता है वह पूर्णतः नया होता है। क्या आप इसे अच्छी तरह समझ रहे हैं? क्या आप उस उत्तर को प्रत्यक्ष रूप से देख रहे हैं अथवा आप उसे केवल बौद्धिक यानी शाब्दिक रूप से ही देख रहे हैं? यदि आप इसे केवल शाब्दिक रूप से ही देख रहे हैं तो आप वस्तुतः इसे खंडित रूप से देख रहे हैं, और इसलिए यह एक समग्र उत्तर नहीं है। परंतु यदि आप अपने संस्कारों तथा उस संस्कृति, जिसमें आपका पालन–पोषण हुआ है, के खतरे को वस्तुतः देखते हैं तो स्वतंत्रता का तत्क्षण कर्म घटित होता है।

Now, the mind—by the mind we mean the totality in which there is no fragmentation at all as the intellect, as the brain, as ambition, as sentiment, but the whole—such a mind sees the danger of nationalism, of this absurdity called religion. It sees that all the so-called religious people are repeating in terms of the past, with the image they have of the Christ, or of the Buddha or of the Krishna; it sees that if you act according to the past, you are not only adding to the confusion, to the misery, you are utterly degenerating. Degeneracy comes in only when you see the danger and do not act.	अब मन -- मन से हमारा अभिप्राय वह समग्रता है जिसमें बुद्धि, मस्तिष्क, महत्वाकांक्षा, भावना आदि जैसे अलग-अलग खंड नहीं है बल्कि एक अखंडता है, ऐसा मन अब राष्ट्रवाद के खतरे को देखता है तथा उस मूढ़ता के खतरे को भी देखता है जिसे धर्म कहा जाता है। ऐसा मन इस तथ्य को देखता है कि जितने भी तथाकथित धार्मिक लोग हैं वे अतीत की शैली में ही दोहराते चले जा रहे हैं तथा ईसा मसीह, बुद्ध या कृष्ण की प्रतिमा को ढो रहे हैं। वह यह भी देखता है कि यदि कोई व्यक्ति अतीत के अनुसार ही कार्य करता है तो वह न केवल भ्रांति और दुःख में वृद्धि कर रहा है बल्कि उसका अपना भी चरम रूप से अधःपतन हो रहा है। अधःपतन तभी होता है जब कोई व्यक्ति खतरे को देखता है परंतु कुछ करता नहीं।
If you see the danger, you will act; and it is only the mind that sees, listens, learns that is always happy. Therefore, there is never action but acting. In acting, the active principle—there is no division and hence no conflict. Learning is in movement and that which is in movement is free. But a mind that has conclusions, forrnulas, opinions, judgements, commitments, such a mind is not a free mind.) when it meets the immense, complex problem of living, it is incapable of meeting it wholly, completely with that feeling of sacredness.	यदि आप खतरे को सचमुच देख रहे है तो आप कर्म करेंगे; और ऐसा ही मन सदा आनंदित रहता है जो देखता है, सुनता है और सीखता है। अतः वहाँ कर्म भी नहीं होता बल्कि क्रियाशीलता होती है। उस क्रियाशीलता में क्रियाशील शक्ति में कोई विभाजन नहीं होता और इसीलिए कोई द्वंद्व भी नहीं होता। गतिशीलता में ही सीखना घटित होता है और जो चीज गतिशील है वह स्वतंत्र एवं मुक्त है। परंतु जो मन निष्कर्ष, फार्मूला, मत मूल्यांकन, प्रतिबंद्धता आदि से भरा है वह एक मुक्त मन नहीं है। ऐसे मन का सामना जब जीने की विकट और जटिल समस्या से होता है तो वह इसका समाना संपूर्णता, समग्रता और पवित्रता की भावना से नहीं कर पाता।
So that is the thing that is in front of you. The house is burning and all your attempts in terms of the past will not put that fire out. The putting out of that fire demands a new quality of the mind and a vital movement of the heart which is completely different.	तो यही चुनौती आपके सामने खड़ी है। घर जल रहा है और अतीत की शैली में किये गये आपके प्रयत्न उस आग को बुझा नहीं पायेंगे। उस आग को बुझाने के लिए जो चीजें जरूरी हैं वे हैं मन की एक नयी गुणवत्ता एवं हृदय का एक ऐसा जीवंत स्पंदन जो पूर्णतः भिन्न हो।

Love is not pleasure. Love is not desire. This is the quality which you must have now, not tomorrow; a quality which you cannot possibly practise, which you cannot possibly cultivate. That which you practise cultivate, becomes mechanical.	प्रेम सुख नहीं है। प्रेम वासना नहीं है। यह एक ऐसी गुणवत्ता है जो आपके पास होनी चाहिए अभी, कल नहीं, एक ऐसी गुणवत्ता जिसे आप अभ्यास द्वारा संभवतः विकसित नहीं कर सकते। जिस चीज को अभ्यास द्वारा विकसित किया जाता है वह यांत्रिक बन जाता है।
Truth is not yours,or mine; it is in no temple, no church, it is not in an image, it is not in a symbol. It is there for you to see and know. It is a free mind, the lovely, clear, perceptive mind that sees and acts.	सत्य न आपका है और न मेरा। यह किसी मंदिर में नहीं है और न किसी गिरजाघर, किसी प्रतिमा या किसी प्रतीक में। आपके देखने और जानने के लिए यह सदा मौजूद है। जो मन मुक्त है अर्थात् सुंदर, स्पष्ट और अवलोकन में तत्पर मन ऐसा ही मन देखता और कर्म करता है।
	नयी दिल्ली, नवंबर १९६९
	के. एफ. टी. इंगलैंड बुलेटिन १७, १९७३